ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

अगस्त-२०१९

अपनी बोली अपना आँगन,
संस्कृति अपनी अपना शासन।
नैसर्गिक अधिकार हमारा,
दयानन्द ने यही पुकारा।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

अगस्त-२०१९ ◆ वर्ष ८ ◆ अंक ०३ ◆ उदयपुर

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹ १० ६२

भारत
के व्यंजनों का आधार है, एम.डी.एच. मसालों से प्यार
Garam masala
Kitchen King
Sambhar masala
Sabzi masala
DEGGI MIRCH
Shahi Paneer masala
KASOORI METHI
Chana masala
Pav Bhaji masala
Chunky Chat masala
MDH
मसाले
सेहत के रखवाले
असली मसाले सच-सच
महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली - 110015 फोन नं० 011-41425106-07-08
E-mails : mdhcare@mdhspices.in, delhi@mdhspices.in www.mdhspices.com
ESTD. 1919

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग

नवनीत आर्य (मो.9314535379)

व्यवस्थापक

सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)

सहयोग	भारत	विदेश
संरक्षक	11000 रु.	$ 1000
आजीवन	1000 रु.	$ 250
पंचवर्षीय	400 रु.	$ 100
वार्षिक	100 रु.	$ 25
एक प्रति	10 रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच टाऊन हॉल, उदयपुर
खाता संख्या : 310102010041518
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३१२०
श्रावण शुक्ल सप्तमी
विक्रम संवत्
२०७६
दयानन्दाब्द
१९५

कवर पृष्ठ : स्वाधिनता दिवस

August - 2019

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन
3500 रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000	रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	1000	रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	750	रु.

समाचार २८
हलचल २९

०४	वेद सुधा
०९	वह देश कौन-सा है?
१०	वेद में राष्ट्रभक्ति का वर्णन
१२	कुर्सी देवी का अत्यन्त प्राचीन मन्दिर
१५	एकता में अनेकता
१६	योगेश्वर श्रीकृष्ण
२२	सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०८/१९
२३	वेदभाष्य का अधिकार किसको?
२६	स्वास्थ्य- शराब छोड़ें आयुर्वेद से
२७	कथा सरित- कद्दू की तीर्थयात्रा
३०	सत्यार्थ पीयूष- बहुदेवतावाद

स्वामी: श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - ८ अंक - ०३

मुद्रण: द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001
(0294) 2417694, 09314535379, 09829063110
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

हम ऐश्वर्य की चोटी पर चढ़ जाएँ

भगभक्तस्य ते वयमुदशेम तवावसा।
मूर्धानं राय आरभे।। - ऋग्वेद १/२४/५

अर्थ- हे देव! (भगभक्तस्य) भजनीय ऐश्वर्य के बाँटने-वाले (ते) आपके (वयम्) उपासक लोग हम (तव) आपकी (अवसा) रक्षा द्वारा (रायः) ऐश्वर्य की (मूर्धानम्) चोटी को (उत्-अशेम) उत्कृष्ट रीति से प्राप्त करें (जिससे की हम लोग) (आरभे) आरम्भ करने योग्य कार्यों में (प्रवृत्त हो सकें।)

पिछले दो मंत्रों में प्रभु के भजनीय ऐश्वर्य का वर्णन हो चुका है। तृतीय मंत्र में कहा गया था कि प्रभु सब प्रकार वरण करने योग्य, चाहने योग्य, सुखदायक ऐश्वर्यों के स्वामी हैं। चतुर्थ मंत्र में कहा गया था कि प्रभु का वह ऐश्वर्य हमें प्राप्त नहीं होता तो इसका कारण हमारा ही अपना दोष और पाप है। प्रस्तुत मंत्र में प्रभु के उसी भजनीय ऐश्वर्य को प्रकारान्तर से वर्णित किया गया है।

मंत्र में भगवान का एक विशेषण दिया गया है- भग-भक्त। भगभक्त का अर्थ होता है भग अर्थात् भजन करने योग्य, सेवन करने योग्य, सुखदायक, ऐश्वर्य को विभक्त करनेवाला- बाँटनेवाला। भगवान सेवन करने योग्य ऐश्वर्य के विभक्ता हैं। अपने ऐश्वर्य को वे सबमें विभक्त करते रहते हैं। वे अपने ऐश्वर्य से किसी को वर्जित नहीं रहने देते। क्षुद्र-से-क्षुद्र और बड़े-से-बड़े प्राणी को- सबको प्रभु का ऐश्वर्य यथायोग्य रूप में निरन्तर मिल रहा है। पापियों को भी वह मिल रहा है। उससे कोई भी वर्जित नहीं है तभी तो हम सब प्राणी अपना-अपना जीवन धारण कर रहे हैं और जीवन में न्यूनाधिक सुख प्राप्त कर रहे हैं। जिस क्षण में प्रभु हमें अपने ऐश्वर्य से पूर्णरूप में वंचित करने का निश्चय कर लेते हैं उसके आगे तो हमारा जीवन ही नहीं रह पाता- हमें मृत्यु के मुख में चला जाना पड़ता है। भगवान का ऐश्वर्य यथायोग्य रूप में सबको बँट रहा है।

मंत्र में कहा गया है कि 'ऐश्वर्य के बाँटनेवाले हे देव! आपके उपासक हम लोग आपकी रक्षा द्वारा ऐश्वर्य की चोटी को प्राप्त करें।' इस मंत्र-वाक्य के 'आपके उपासक हम लोग'- 'ते वयम्'- इन शब्दों को ध्यान से देखना चाहिए। भगवान के ऐश्वर्य की चोटी किन्हें प्राप्त होती है, उनका ऐश्वर्य पूर्णरूप से किन्हें प्राप्त होता है? उनको जो भगवान से कह सकते हैं कि 'ते वयम्'- हम आपके हैं। जिनकी चित्तवृत्ति सदा भगवान में लगी रहती है, जो सदा भगवान को स्मरण रखते हैं, भगवान का रूप जिनके मन की आँखों के आगे सदा रहता है, इसलिए जो भगवान के गुणों से आकृष्ट होकर उन्हें अपने चरित्र में धारण करते रहते हैं और इस प्रकार जो भगवान के अपने बन जाते हैं उन्हें भगवान का ऐश्वर्य पूर्णरूप से प्राप्त होता है। हमें जो बहुत बार दुःख में दब जाना पड़ता है, हमसे जो सुख-आनन्द बहुत बार दूर भाग गया-सा दीख पड़ता है, उसका कारण यह होता है कि हम प्रभु के नहीं रहते, हम प्रभु से दूर चले जाते हैं, हमारा चरित्र प्रभु के गुणों से विरहित होकर पापमय बन जाता है। जब तक हम प्रभु के रहते हैं, प्रभु के सत्य, न्याय, दया, ज्ञान, बल आदि गुणों का समावेश तब तक हममें रहता है तब तक हमें प्रभु का ऐश्वर्य निरन्तर प्राप्त होता रहता है। ज्यों-ज्यों हम प्रभु से परे हटते जाते हैं, त्यों-त्यों हमसे ऐश्वर्य छिनने लगता है और हमारा दुःख-संकट बढ़ जाता है।

मन्त्र में कहा गया है कि 'हम आपकी रक्षा द्वारा ऐश्वर्य की चोटी को प्राप्त करें।' इसका भाव तो स्पष्ट ही है। जो प्रभु के बनकर

रहते हैं उन्हें प्रभु की रक्षा प्राप्त होती है और उस रक्षा में रहकर वे खूब उन्नति करते हैं, उन्हें खूब ऐश्वर्य प्राप्त होता है। जिन्हें भगवान की रक्षा प्राप्त हो जाती है वे ऐश्वर्य की चोटी पर चढ़ जाते हैं। उनके ऐश्वर्य में कहीं से किसी प्रकार की भी कोई कमी नहीं रहती। वे पूर्ण ऐश्वर्य के अधिपति हो जाते हैं- उनके आनन्द-मंगल में पराकाष्ठा की पूर्णता होती है।

मन्त्र में प्राप्त करने के लिए 'उदशेम' क्रिया आई है। इसमें 'उत्' उपसर्ग है। इसे एक प्रकार का क्रियाविशेषण समझना चाहिए। इस उपसर्ग का अर्थ होता है- 'उत्कृष्ट रीति से।' हम जो ऐश्वर्य प्राप्त करें वह उत्कृष्ट रीति से प्राप्त किया जाना चाहिए। उसकी प्राप्ति में हमें किसी प्रकार का छल-छिद्र नहीं करना चाहिए। पवित्र उपायों से हमें ऐश्वर्य प्राप्त करना चाहिए। प्रभु के बन्दों को जिस तरह चलकर ऐश्वर्य कमाना चाहिए उस तरह चलकर हमें ऐश्वर्य कमाना चाहिए। क्रिया के 'उत्' उपसर्ग का यही ध्वनितार्थ है।

'अशेम' क्रिया का अर्थ हमने 'प्राप्त करें' ऐसा किया है। इसका शब्दार्थ है 'व्याप्त हो'। हम प्रभु की कृपा से ऐश्वर्य की चोटी में, ऐश्वर्य की प्रचुरता में व्याप्त हों, हम ऐश्वर्य में घुस जाएँ। प्रभु की रक्षा के साथ इस क्रिया के प्रयोग की यह ध्वनि है कि जिन्हें भगवान की रक्षा प्राप्त हो जाती है उन्हें इतना अधिक ऐश्वर्य प्राप्त होता है कि वे ऐश्वर्य में घुस जाते हैं और उस ऐश्वर्य से जनित आनन्द में डूबे रहते हैं।

मन्त्र में ऐश्वर्य का एक नाम 'रै' आया है। मन्त्र का पद 'रायः' 'रै' का ही षष्ठीविभक्ति का एक वचन है। यह शब्द 'रा' धातु से बनता है। इस धातु का अर्थ दान करना होता है। जो दान किया जाए वह ऐश्वर्य है। 'रै' के इस धात्वर्थ से यह ध्वनित होता है कि हमें ऐश्वर्य का ग्रहण दान करने के लिए करना चाहिए। हमारे पास जितने प्रकार का भी ऐश्वर्य हो, हमें उसे औरों को देते रहना चाहिए। हमें अपनी शारीरिक शक्ति, मानसिक शक्ति, आत्मिक शक्ति और प्राकृतिक पदार्थों के संग्रह की शक्ति-सब प्रकार के ऐश्वर्य की शक्ति दूसरों के कल्याण में लगानी चाहिए। जिस प्रकार भगवान भगभक्त है, ऐश्वर्य को बाँटनेवाले है, उसी प्रकार हमें भी भगभक्त होना चाहिए। इसी में हमारे ऐश्वर्य की सार्थकता है। प्रभु के भक्त को प्रभु-सा ही होना चाहिए।

ऐश्वर्य किसलिए प्राप्त किया जाता है? ऐश्वर्य के नाम 'रै' से जो बात सूचित की गई है उसी को मंत्र में प्रकारान्तर से स्पष्ट शब्दों में कह दिया गया है। भगवान से प्रार्थना है कि 'हम आपकी रक्षा द्वारा ऐश्वर्य की चोटी को प्राप्त करें, जिससे हम आरम्भ करने योग्य कार्यों में प्रवृत्त हो सकें।' जिन कार्यों को करने से अपने भले के साथ-साथ औरों का भला भी होता है वे उत्तम कार्य हैं और उन्हीं को हमें करना चाहिए। इस प्रकार हमें अपना सब प्रकार का ऐश्वर्य लोकोपकार के, लोगों की भलाई के कार्यों में लगाना चाहिए तभी हमारे ऐश्वर्य की चरितार्थता है, तभी हमारे 'रै' में 'रै' पन आता है।

हे मेरे आत्मन्! तू भी अपने को भगवान का बना ले, फिर तुझे उनकी रक्षा प्राप्त हो जाएगी। उस रक्षा में रहते हुए तुझे पूर्ण ऐश्वर्य प्राप्त होंगे। तेरे सारे दारिद्र्य कट जायेंगे। तेरे अपने ही दारिद्र्य नहीं कट जाएँगे, तू औरों के भी दुःख-दारिद्र्य काटने वाला बन जाएगा।

– आचार्य प्रियव्रत जी
साभार (वरुण की नौका)

नवलखा महल में जीर्णोद्धार, सौन्दर्यीकरण एवं उपयोगिता विस्तार-कार्य के कारण इस वर्ष सत्यार्थप्रकाश महोत्सव का आयोजन स्थगित किया गया है, सूचनार्थ।

इस बात से तो इंकार नहीं किया जा सकता कि भारत में शिक्षा का स्तर और दायरा बढ़ता जा रहा है। और यह भी समझना साधारणतया ठीक ही होना चाहिए कि शिक्षा के प्रसार के साथ समाज में तर्काधारित सोच का विस्तार होना चाहिए। परन्तु ऐसा कतई नहीं हो रहा। आज भी अंधविश्वास और पाखण्ड जिस तरह भारतीय मस्तिष्क पर शिकंजा कसे हुए है, आश्चर्य का विषय है और यह निष्कर्ष निकालने को मजबूर करता है कि शिक्षा का 'रेशनेलिटी' से कोई सम्बन्ध नहीं है। जब हम कुलपति के पद पर विराजमान शिक्षाविदों को यही सब करते देखते हैं तो ऐसा ही लगता है। परन्तु यह निष्कर्ष तो ठीक नहीं है। बात यह है कि इन अंधविश्वासों का हमारे जीवन में इतनी गहराई से प्रवेश हो गया है कि उसके उन्मूलन के लिए एक वैचारिक युद्ध की आवश्यकता है। वस्तुतः जो अंधविश्वास में पूर्ण विश्वास नहीं रखते वे भी यह सोचकर कि इसका अवलंबन न लेने से कहीं कथित हानि न हो जाय, इसकी गिरफ्त में बने रहते हैं। कोई समाज शास्त्री या संगठन इस ओर विशेष प्रयास नहीं कर रहा।

यह प्राथमिक रूप से आर्य समाज का कार्य है। आज जब आर्य समाज के लगभग सभी कार्यक्रम अन्य संस्थाओं ने ले लिए हैं अथवा कानूनों के निर्माण से पूर्ण हो गए हैं, तब पाखण्ड-खण्डन जिसकी पताका फहराने से महर्षि दयानन्द ने अपने कार्यक्रम की शुरुआत की थी, एक ऐसा कार्य बचा है (हमारी दृष्टि में) जिसे आर्यसमाज को ही करना है। परन्तु यह अत्यावश्यक कार्य भी उपेक्षित ही है। हम सत्यार्थ सौरभ के माध्यम से इस पर सर्वाधिक लिखने का प्रयास करते रहे हैं परन्तु वह तो नक्कारखाने में तूती की आवाज के सदृश है। रेशनल सोसायिटी ही हमसे बेहतर कार्य कर रही है, परन्तु इस सर्वग्रासी समस्या के निराकरण में वह भी अत्यल्प प्रयास है।

बात यह भी है कि प्रजा समाज के बड़ों का अनुसरण करती है। परन्तु वे बड़े भी इन अंधविश्वासों में आकण्ठ डूबे हैं, और हमारा मीडिया शायद कभी ही इस पर टिप्पणी करता हो। चुनावों के आते ही अंधविश्वास का सर्वव्यापक विस्तार हमें नजर आता है। कोई पार्टी, कोई नेता इससे बचा नहीं है। आप नॉमिनेशन की बात ले लें। शायद ही कोई ऐसा नेता हो जो बिना तथाकथित मुहूर्त के नॉमिनेशन करता हो। आपने देखा होगा कि नॉमिनेशन फार्म भरकर तैयार है, उम्मीदवार व उसके प्रस्तावक उपस्थित हैं, चुनाव अधिकारी भी मौजूद हैं पर नॉमिनेशन फाइल करने की बजाय सब घड़ी की ओर देख रहे हैं, कारण उस शुभ मुहूर्त में अभी देर है जिसका निर्धारण उस उम्मीदवार के ज्योतिषी जी ने किया था। इस मध्य मीडिया यह सब लाइव दिखा रहा है देर भी दिखा रहा है पर 'मुहूर्त' की अवधारणा पर कोई टिप्पणी नहीं कर रहा। यह है अंधविश्वासों की मीडिया सहित सभी की स्वीकृति।

यहाँ साधारण सा तर्क, है तो प्रबल, पर उस पर कोई ध्यान देता है ऐसा लगता नहीं। एक लोकसभा सीट पर मान लीजिये दो ही प्रमुख उम्मीदवार हैं और दोनों ही अपने लिए श्रेष्ठतम मुहूर्त के अनुसार नॉमिनेशन भरते हैं परन्तु जीतता तो एक ही है, फिर प्रश्न है कि दूसरे का शुभ मुहूर्त उसके लिए अशुभ क्यों हो गया? अतः शुभ मुहूर्त आदि अंधविश्वासों की निःसारता स्पष्ट है। इसी कारण कोई भी नेता जीतने के पश्चात् अपनी जीत का श्रेय अपने कार्य, नीति आदि को देता है न कि मुहूर्त को। हमने कभी नहीं सुना कि किसी विजित प्रत्याशी ने यह कहा हो कि उसकी जीत शुभ मुहूर्त के कारण हुयी है। भीलवाड़ा (राजस्थान) के पास एक ग्राम है जिसमें एकाधिक ज्योतिषी प्रसिद्धि को प्राप्त हुए हैं, कारण कि उनकी तथाकथित भविष्यवाणी का सम्बन्ध एक सशक्त महिला केन्द्रीय मंत्री से जुड़ चुका है। अब स्थिति यह बताते हैं कि उस गाँव में घर-घर में ज्योतिषी हैं और कोई भी चुनाव आने से पूर्व उस गाँव की रंगत बदल जाती है। बड़ी-बड़ी गाड़ियाँ अगर आप उस गाँव में देख लें तो बिना किसी शंका के निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि कहीं चुनाव होने वाले हैं।

हमने मध्य प्रदेश के गत चुनावों में एक विचित्र दृश्य देखा कि कांग्रेस के नेता ज्योतिरादित्य सिंधिया जब मन्दसौर क्षेत्र में प्रचार करने गए तो उन्होंने नींबू मिर्ची की बनी माला पहनी हुयी थी। फूलों की माला और कपड़े के दुपट्टे तो सभी ने देखे हैं। नींबू-मिर्ची का प्रयोग अंधविश्वास के अन्तर्गत आने वाले किन प्रलोभनों को सिद्ध करने का दावा कर उनके उपयोग के लिए ललचाता है यह हम सभी जानते हैं, परन्तु यह नींबू-मिर्ची की माला ज्योतिरादित्य जी की कोई सहायता नहीं कर सकी। वे बहुत बड़े अकल्पनीय अन्तर से हारे। तो क्या अब आशा की जा सकती है कि कम से कम नींबू-मिर्ची अब हमें चौराहों पर नहीं मिलेंगे? जी नहीं ऐसी आशा भी नहीं कीजिएगा। यही तो अंधविश्वास की खूबी है। बार-बार गलत होने पर भी इससे विरक्ति नहीं होती आसक्ति बढ़ती जाती है।

इन चुनावों में भोपाल निर्वाचन काफी प्रसिद्ध हुआ। कारण रहे श्री दिग्विजय सिंह के प्रचार में उतरे तथाकथित साधू सन्त और उनके द्वारा किये अनुष्ठान। सबसे पहिले हम बात करेंगे स्वामी वैराज्ञानन्द की। यह वैराज्ञानन्द महामण्डलेश्वर की उपाधि से सुशोभित हैं और निर्वाणी अखाड़े के सन्त बताये जाते हैं। हमने इनसे व एक और सन्त कम्प्यूटर बाबा (नामदेव) से टीवी ९ भारतवर्ष के सम्पादक श्री अजीत अंजुम की पूरी बात सुनी। वैराज्ञानन्द जी का कहना था कि वे साढ़े ५ क्विंटल मिर्च का हवन करेंगे जिससे दिग्विजय जी की जीत सुनिश्चित होगी। वहीं कम्प्यूटर बाबा का दावा था कि उनके हठयोग से दिग्विजय जी निश्चित जीतेंगे। जब अंजुम ने उनसे कहा कि यदि दिग्विजय हार गए तो वे क्या प्रायश्चित करेंगे? तब वैराज्ञानन्द जी ने स्पष्ट कहा कि वे हवन के स्थल पर ही जिन्दा समाधि ले लेंगे हालांकि ऐसा अवसर आयेगा नहीं क्योंकि जो यज्ञ वे करने जा रहे हैं उसके प्रभाव से दिग्विजय को जीतना ही है।

दूसरी ओर कम्प्यूटर बाबा ने हठयोग साधना के माध्यम से दिग्विजय जी के जीतने का दावा किया था। अंजुम ने इनसे भी लाख पूछा पर उन्होंने सीधा उत्तर नहीं दिया कि दिग्विजय यदि हार गए तो वे क्या करेंगे। बस उनका दावा था दिग्विजय हार ही नहीं सकते। अपने दावे को पुष्ट बनाने के लिए उनका कथन था कि विधानसभा चुनावों में उन्होंने कांग्रेस को समर्थन दिया था और वह विजयी हुयी। अबकी बार भी ऐसा ही होगा। पाठक अति संक्षिप्त में इन कम्प्यूटर बाबा को भी जान लें। इनका नाम नामदेव त्यागी है। इन्हें कम्प्यूटर बाबा क्यों कहा जाता है? क्योंकि यह अपने लेपटाप को अपने साथ रखते हैं और गजेट प्रेमी हैं। लेपटाप पर ये क्या देखते हैं? इस प्रश्न का बेहतर उत्तर तो प्रभु दे सकते हैं हाँ कहा यह जाता है कि वे कार्टून के शौकीन हैं अतः कार्टून देखते हैं। नामदेव की राजनीति में रुचि नई नहीं है। इन्होंने २०१४ के लोकसभा चुनावों में 'आप' पार्टी से टिकट माँगा था। इन्होंने शिवराज सरकार के खिलाफ कथित

नर्मदा घोटाले को लेकर और नर्मदा किनारे से अवैध खनन के विरोध में यात्रा निकालने की घोषणा की थी। फिर जाने क्या हुआ? यह प्रस्तावित यात्रा तो हुयी नहीं हाँ, शिवराज सरकार ने इन सहित चार अन्य साधुओं को राज्य मंत्री बना दिया। बिना किसी योग्यता के ऐसे तथाकथित सन्तों को राज्यमंत्री बनाना सीधे तौर पर तुष्टीकरण के लिए उठाया कदम है और जो परिणाम वह दे सकता था वही हुआ। २०१८ के विधान सभा चुनावों से पूर्व ही इन्होंने शिवराज को छोड़ कांग्रेस का दामन थाम लिया और उतर पड़े मैदान में दिग्विजय को दिग्विजय दिलाने (बाबा ने इन्हीं शब्दों का प्रयोग मीडिया के समक्ष किया था) आखिर मिर्ची यज्ञ भी हुआ और हठ-साधना भी और दिग्विजय ने सपत्नीक उसमें भाग भी लिया, परन्तु जिस साध्वी प्रज्ञा को कोई जानता भी नहीं था और जिसने हेमन्त करकरे व नाथूराम गोडसे पर अपना बयान देकर विवाद पैदा कर दिया था उसने दिग्विजय को पौने चार लाख मतों के विशाल अन्तर से हरा दिया। अब उक्त तथाकथित धार्मिक क्रियाकाण्डों का क्या स्पष्टीकरण है? मिर्ची यज्ञ व हठयोग की कलई खुल गयी है, पर क्या पाठक इन्हें और इन्हीं के प्रकार के अन्य क्रियाजालों को व्यर्थ मान उनसे किनारा कर लेंगे? हमें तो लगता है, नहीं। क्योंकि बुरी तरह पराजित होने वाले दिग्विजय जी ने ही इन कम्प्यूटर बाबा को बाहर का रास्ता नहीं दिखाया तो दूसरे ऐसा क्यों करेंगे? और यही अंधविश्वास के फलने-फूलने का मुख्य कारण है, बार-बार इनकी पोल खुलने के बाद भी कोई इनका साथ छोड़ता नहीं है।

चुनावों के परिणाम के बाद कुछ दर्शक देखना चाह रहे थे कि अब उक्त दोनों बाबा क्या करेंगे? सो वैराज्ञानन्द तो गायब हो गए परन्तु उन्हें निर्वाणी अखाड़े ने बाहर का रास्ता दिखा दिया है, यह अवश्य सही कदम है। (अब काफी दिनों पश्चात् वैराज्ञानन्द प्रकट हुए और उन्होंने जिला प्रशासन को जिन्दा समाधि लेने हेतु अनुमति देने के लिए आवेदन किया है। पर यह सब ढकोसला ही है क्योंकि कोई प्रशासन ऐसी अनुमति नहीं देगा और बाबा यह जानते हैं।)

परन्तु कम्प्यूटर बाबा का क्या हुआ? सो बता दें उन्होंने राज्य सरकार के द्वारा गठित 'माँ नर्मदा, माँ क्षिप्रा, माँ मंदाकिनी नदी बोर्ड के अध्यक्ष का पद संभाल लिया है और यह पदभार संभलवाते समय दिग्विजय उनके हुजूर में खड़े थे। स्पष्ट है कि चाहे कम्प्यूटर बाबा का हठयोग फ्लॉप हो गया हो, पर उनकी राजनीतिक महत्ता किन्हीं कारणों से विद्यमान है इसीलिए दिग्विजय उनसे चिपके हुए हैं। नए अध्यक्ष अर्थात् कम्प्यूटर बाबा ने आते ही अपने लिए चोपर हेलीकाप्टर की माँग कर दी है यह है ताजा खबर।

लेखनी को विश्राम देते हुए बारिश कराने के एक नवीनतम तरीके की ओर पाठकों का ध्यान दिला दें। आन्ध्र सरकार के प्रमुख और उनके अंधविश्वास प्रेम से तो आप परिचित होंगे। पूरे प्रदेश के मंदिरों में स्पेशल पूजा करायी जा रही है, इसमें ४५ लाख का बजट पंडितों को उपलब्ध कराया गया है। इसी मध्य पूजा का नवीन तरीका सामने आया है वह है पानी के टब में बैठकर पूजा करना। पंडितगण मोबाइल एप्लीकेशन से मन्त्र पाठ कर रहे हैं। उल्सूर के शोमेश्वर मंदिर के मुख्य पुजारी श्री एस.आर. दीक्षित ने इस बारे में बताया -

"Today we conducted Varuna pooja and Varuna home. Then we sat in water-filled pots to conduct Prajanya Jappa. This will please lord Shiva and lord Varuna, who will ensure good monsoons; we may see the result really soon,"

क्या ही आधुनिकता की चाशनी से युक्त अंधविश्वास की जलेबियाँ अपठितों को ही नहीं, शीर्षस्थ व्यक्तियों को लुभाए जा रही हैं। सही बात यह है कि मानव की विशेषता ही यह है कि प्रभु ने उसे सही गलत की पहचान के लिए बुद्धि दी है। उसका प्रयोग हमें करना ही चाहिए। ज्ञान के प्रकाश में ही अविद्या का अन्धकार छट सकता है।

- अशोक आर्य
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

विश्व भर से सहस्रों की संख्या में आने वाले दर्शकों के नवलखा महल, उदयपुर के बारे में विचार

आज का दिन जीवन का महत्वपूर्ण दिन है महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन परिचय और उनका त्याग हमें भारतीय होने में गर्व प्रदान करता है। यह नवलखा महल स्थित आर्यावर्त्त गैलेरी अद्वितीय है। - प्रदीप कुमार

आर्यसमाज की आर्यावर्त्त गैलेरी बहुत ही सुन्दर तरीके से सजायी गयी है। स्वामी जी के जीवनकाल व मेवाड़ के बारे में आर्ट गैलेरी के माध्यम से अद्‌भुत जानकारी प्राप्त होती है। स्वामी जी के 'सत्यार्थ प्रकाश' से हमें शिक्षा मिलती है। धन्यवाद। - रोहित कुमार वर्मा

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक व आर्थिक जीवन के साथ ही राष्ट्रभक्ति कैसी हो इसे सत्यार्थ प्रकाश द्वारा बताया है। उन सब बातों को गैलेरी के माध्यम से सुन्दर चित्रण किया है मुझे इसे देखकर अत्यधिक प्रसन्नता हुई। - सत्यप्रिय, सवाईमाधोपुर

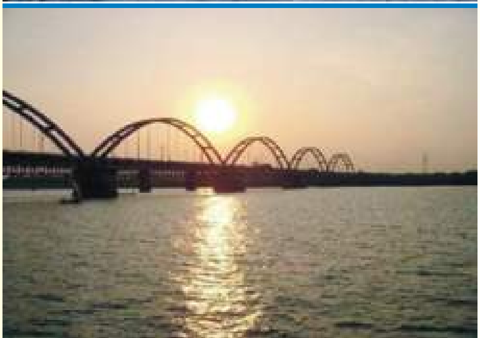

वह देश कौन-सा है?

१५ अगस्त पर विशेष

मन-मोहिनी प्रकृति की गोद में जो बसा है। सुख-स्वर्ग-सा जहाँ है
वह देश कौन-सा है?
जिसका चरण निरन्तर रतनेश धो रहा है। जिसका मुकुट हिमालय
वह देश कौन-सा है?
नदियाँ जहाँ सुधा की धारा बहा रही हैं। सींचा हुआ सलोना
वह देश कौन-सा है?
जिसके बड़े रसीले फल, कंद, नाज, मेवे। सब अंग में सजे हैं,
वह देश कौन-सा है?
जिसमें सुगन्ध वाले सुन्दर प्रसून प्यारे। दिन रात हँस रहे है
वह देश कौन-सा है?
मैदान, गिरि, वनों में हरियालियाँ लहकती। आनन्दमय जहाँ है वह
देश कौन-सा है?
जिसकी अनन्त धन से धरती भरी पड़ी है। संसार का शिरोमणि
वह देश कौन-सा है?
सब से प्रथम जगत् में जो सभ्य था यशस्वी। जगदीश का दुलारा
वह देश कौन-सा है?
पृथ्वी-निवासियों को जिसने प्रथम जगाया। शिक्षित किया सुधारा
वह देश कौन-सा है?
जिसमें हुए अलौकिक तत्वज्ञ ब्रह्मज्ञानी। गौतम, कपिल, पतंजलि,
वह देश कौन-सा है?
छोड़ा स्वराज तृणवत् आदेश से पिता के। वह राम थे जहाँ पर
वह देश कौन-सा है?
निस्वार्थ शुद्ध प्रेमी भाई भले जहाँ थे। लक्ष्मण-भरत सरीखे
वह देश कौन-सा है?
देवी पतिव्रता श्री सीता जहाँ हुई थीं। माता-पिता जगत् का
वह देश कौन-सा है?
आदर्श नर जहाँ पर थे बाल ब्रह्मचारी। हनुमान, भीष्म, शंकर,
वह देश कौन-सा है?
विद्वान्, वीर, योगी, गुरु राजनीतिकों के। श्रीकृष्ण थे जहाँ पर
वह देश कौन-सा है?
विजयी, बली जहाँ के बेजोड़ शूरमा थे। गुरु द्रोण, भीम, अर्जुन
वह देश कौन-सा है?
जिसमें दधीचि दानी हरिश्चन्द्र, कर्ण से थे। सब लोक का हितैषी
वह देश कौन-सा है?
बाल्मीकि, व्यास ऐसे जिसमें महान् कवि थे। श्री कालिदास वाला
वह देश कौन-सा है?
निष्पक्ष न्यायकारी जन जो पढ़े लिखे हैं। वे सब बता सकेंगे
वह देश कौन-सा है?
छत्तीस कोटि भाई सेवक सपूत जिसके। भारत सिवाय दूजा
वह देश कौन-सा है?

कवि– रामनरेश त्रिपाठी

अथर्ववेद के पृथिवी सूक्त में राष्ट्रभक्ति

वेद में राष्ट्रभक्ति का वर्णन

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। इस कारण विश्व में जितने भी प्रकार के सत्य ज्ञान हैं, उन सब के दर्शन हमें वेद में मिलते हैं। इन सब प्रकार के ज्ञान-विज्ञान में देशभक्ति भी एक प्रमुख ज्ञान है। हमारे इस लेख का विषय भी देशभक्ति अथवा राष्ट्रभक्ति ही है। जो व्यक्ति अपने देश से प्रेम नहीं करता, इसकी वृद्धि नहीं चाहता, वह मनुष्य न होकर गन्दी नाली के कीड़े के समान है। अतः आओ हम अथर्ववेद के पृथिवी सूक्त के आधार पर देश प्रेम को समझें। अथर्ववेद में राष्ट्रभक्ति के सम्बन्ध में इस प्रकार प्रकाश डाला गया है -

सत्यं बृहदृतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति।
सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युरुं लोकं पृथिवी नः कृणोतु॥

– अथर्ववेद १२/१/१

मन्त्र का भाव है कि हम इस मन्त्र में बताई सात शक्तियों के अनुसार चलते हुए आगे बढ़ें तो निश्चय ही हमारा राष्ट्र निरन्तर प्रगति पथ पर अग्रसर रहेगा। यह सात शक्तियाँ अवलोकनीय हैं।

सात महाशक्तियाँ–

किसी भी राष्ट्र के नवनिर्माण के लिए उस देश के निवासियों में यह सात गुण वेद ने आवश्यक माने हैं। वेद कहता है कि देश की प्रगति केवल और केवल तब ही सम्भव है, जब देशवासियों में-

१. महान् सत्य– राष्ट्रभक्ति के लिए महान् सत्य नामक गुण का होना आवश्यक है। जिस देश के नागरिक असत्य का आश्रय लेंगे, उस देश में लड़ाई-झगड़ा, कलह-क्लेश बना रहेगा क्योंकि असत्य आचरण होने के कारण कोई भी किसी दूसरे की बातों पर, योजनाओं पर, लेन-देन पर, शिक्षा-दीक्षा पर विश्वास ही नहीं करेगा। (यह स्थिति हम वर्त्तमान भारत के नेताओं में खूब देख रहे हैं, जिनकी अविश्वसनीयता असत्य धारण के कारण देश में प्रतिदिन कलह बढ़ती जा रही है और देश की स्वतंत्रता पर खतरा मंडराने लगा है।) इसलिए मन्त्र उपदेश कर रहा है कि हे देश की उन्नति चाहने वाले नागरिकों तथा देश के नेताओं! सदा सत्य-आचरण करो। यह ही उन्नति का श्रेष्ठ मार्ग है। इससे ही हमारा राष्ट्र आगे बढ़ पावेगा।

२. सत्य ज्ञान– सृष्टि के आरम्भ में चार सर्वश्रेष्ठ ऋषियों के माध्यम से मानव मात्र के कल्याण के लिए परमपिता परमात्मा ने हमें वेद का उत्कृष्ट ज्ञान दिया। ईश्वरीय ज्ञान होने के कारण केवल यह वेद का ज्ञान ही सत्य ज्ञान है, अन्य जितने भी ज्ञान हैं, यदि वह इस वेद ज्ञान से मेल खाते हैं तो सत्य हैं, अन्यथा गलत हैं, असत्य हैं। मन्त्र कहता है कि हमें सत्य-ज्ञान का ही

आचरण करना है। सत्य ज्ञान पर चलते हुए ही हम उन्नति के मार्ग पर चल सकते हैं। हमारी उन्नति में ही राष्ट्र की उन्नति निहित है। अतः वेद का नित्य स्वाध्याय हमारे लिए अत्यावश्यक है।

३. दृढ संकल्प– संकल्पहीन व्यक्ति की स्थिति सदा मुरादाबादी लोटे की भाँति डांवाडोल रहती है। उसको जो भी कोई व्यक्ति जैसा भी कुछ सुझाव देता है, मार्गदर्शन करता है, वह उसके ही अनुसार कार्य करने लगता है। इस कारण कभी कुछ आदेश निकालता है और कभी कुछ। इससे देश में अव्यवस्था फैल जाती है क्योंकि एक दिन एक आदेश आता है और दूसरे दिन उस आदेश के उल्ट कुछ और आदेश आ जाता है। इसलिए न केवल जनता अपितु राजनेताओं को भी अपने संकल्प पर कठोरव्रती होना आवश्यक हो जाता है। जब वह खूब सोच विचार कर दृढ संकल्प हो कोई निर्णय लेंगे तो उसके

कार्यान्वयन में कोई कठिनाई नहीं आवेगी।

४. कर्तव्य परायणता- राष्ट्र के नवनिर्माण में कर्तव्य परायणता का विशेष योग होता है। एक कर्तव्यहीन नागरिक अथवा नेता पूरे राष्ट्र को नरक की ओर धकेलने का कारण बनता है किन्तु कर्तव्यशील नागरिक अपने कर्तव्य को भली प्रकार जानता है और सदा इन्हें सम्मुख रखते हुए ही अपना प्रत्येक कार्य व्यवहार करता है। इससे देश निरन्तर उन्नति पथ का पथिक बना रहता है।

५. तपस्वी वृत्ति- तप और स्वार्थ जीवन के दो पहलू हैं। जहाँ स्वार्थ देश में कटुता पैदा कर विनाश की ओर ले जाता है, वहाँ तपस्वी वृत्ति का व्यक्ति देश को उन्नति के मार्ग पर बनाए रखता है, क्योंकि तपस्वी व्यक्ति को खाने, पहनने या फैशन की आवश्यकता नहीं होती। वह तो इस प्रकार के व्यय को अपव्यय मानता है। इससे देश की विपुल धन-संपत्ति बच जाती है, जिसे देश के नव-निर्माण के कार्यों में लगाया जा सकता है।

६. ज्ञान-विज्ञान की विद्वत्ता- अज्ञानी या अविद्वान् व्यक्ति अपनी मूर्खता के कारण बहुत से गलत कार्य कर जाता है, जिनका उसे ज्ञान ही नहीं होता। इससे न चाहते हुए भी देश का अत्यधिक अहित हो जाता है। इसलिए देश में ज्ञान-विज्ञान का खूब प्रचार होना आवश्यक है ताकि जो भी कार्य किया जावे, उसका आरम्भ करने से पूर्व यह ज्ञानी लोग विचार-विमर्श कर इसके गुण-दोष को जान सकें और जो उत्तम है, उसे ही व्यवहार में लावें।

७. सर्वकल्याण की भावना- जब किसी भी राष्ट्र के प्रत्येक प्राणी में सर्वमंगल की वृत्ति होगी, वह सब के कल्याण की सदा इच्छा करेगा तो निश्चय ही उसके दूसरों की सहायता की भावना बलवती होगी। इस दूसरों की सहायता को ही परोपकार कहते हैं। जब मानव में परोपकार की वृत्ति आ जाती है तो वह स्वार्थ की ओर कभी देखता ही नहीं। इस प्रकार से की गई सेवा को निष्काम सेवा भी कहते हैं। जब मानव निष्काम सेवा करने लगता है तो वह व्यक्तिगत उन्नति की चिन्ता के स्थान पर दूसरों की उन्नति के लिए कार्य करता है। इसे ही सर्वमंगल की भावना कहते हैं। जब वह इस भावना से काम करता है तो इसे परोपकार कहते हैं। जहाँ नागरिक परोपकारी हैं, उस राष्ट्र का उन्नत होना निश्चित हो जाता है। जब देश के नागरिकों में यह सात महाशक्तियाँ आ जाती हैं, नागरिक इन महाशक्तियों के गुण-दोष समझने लगते हैं तथा इनके गुणों के अनुरुप ही कार्य करते हैं तो राष्ट्र इतनी तीव्र गति से आगे बढ़ता है कि विश्व के अन्य देशों में इस देश का यश और कीर्ति फैल जाती है और यह राष्ट्र बड़े आदर की दृष्टि से देखा जाता है।

मातृभूमि हमें विस्तृत प्रकाश दे

मन्त्र के इस दूसरे भाग में बताया गया है कि हमारी मातृभूमि उत्तम अनुभवों को संभालती है और हमारे इन कार्यों के आधार पर हमारे भविष्य को बनाने का कार्य करती है।

इसलिए मन्त्र उपदेश करता है कि हमारी मातृभूमि हमें अत्यधिक विस्तार वाला स्थान हमारे हितसाधन के लिए दे और यह हित प्रकाश के बिना सम्भव ही नहीं। इसलिए हमें ज्ञान का प्रकाश भी दे। इस तथ्य को समझने के लिए हम एक बार फिर सात महाशक्तियों की ओर देखते हैं- यह शक्तियाँ जिस राष्ट्र के नागरिकों के जीवन का अंग बन जाती हैं, वह राष्ट्र सदा स्थायी रूप में रहता है, उन्नति-पथ पर अग्रसर होता चला जाता है। इसमें सदा खुशहाली ही निवास करती है। किसी को कभी भी कोई दुःख-कष्ट-क्लेश नहीं होता।

हमारा संकल्प

मन्त्र के इस भाग में नागरिकों के लिए एक संकल्प लेने को भी कहा गया है। नागरिक संकल्प लेते हुए प्रतिज्ञा करते हुए कहते हैं कि हे मातृभूमि! हम इस देश के नागरिक ऊपर दी गई सातों महाशक्तियों को धारण करने का संकल्प लेते हैं कि हम तेरे लिए इन सातों गुणों से सम्पन्न होकर तेरी रक्षा करने के लिए सदा तैयार हैं। तेरे अन्दर भूतकाल के पदार्थ गड़े हुए हैं, वर्त्तमान का सब कुछ तेरे पास उपलब्ध है तथा भविष्य बनाने के लिए भी तू नित्य उत्सर्जन कर रही है। तू इन तीनों कालों के सबके सब पदार्थों का उत्तम प्रकार से पोषण करने में समर्थ है। सातों गुणों को धारण करने के कारण हम इन पोषक तत्वों को बनाए रखने के लिए सदा अपने जीवन को लगाए रखेंगे।

- डॉ. अशोक आर्य
पॉकेट १/६१ प्रथम तल, रामप्रस्थ ग्रीन सेक्टर-७ वैशाली
गाजियाबाद (उ.प्र.), चलभाष-८२४३७३४३१५

न्यास द्वारा प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश
अब ४००० रु. सैकड़ा
सत्यार्थ प्रकाश प्रचार सहयोग अब
एक हजार प्रतियों के लिए
१५००० रु.

व्यंग्य

कुर्सी देवी का अत्यन्त प्राचीन मंदिर

सागर में मन्दिर

भारत भूमि मन्दिर-भूमि है। इसके पहाड़ों पर मन्दिर हैं, मैदानों में मन्दिर हैं, रेगिस्तानों में मन्दिर हैं और सागरों में मन्दिर हैं। कुछ दिन पहले तक तो यहाँ सिर्फ बच्चे ही पैदा हुआ करते थे लेकिन अब इन मन्दिरों की बदौलत बापू भी जन्म ले रहे हैं। राजा-महाराजाओं के दिन लद गए लेकिन इसके बावजूद थोक के हिसाब से महाराज पैदा हो रहे हैं। नए-नए देवता प्रकट हो रहे हैं, भगवान प्रकट हो रहे हैं और धड़ल्ले से उनके मन्दिर बने रहे हैं। शिव तथा हनुमान जैसे देवताओं के नए मन्दिर बनते हैं और दो-चार साल में, पुराने ही नहीं बल्कि अत्यन्त पुराने पड़ जाते हैं। मेरी ही बस्ती में दो साल पहले एक शिव मन्दिर बना था, अब पुजारी ने उसके द्वार पर एक बड़ा सा बोर्ड लगवा दिया है- 'शिव जी का अत्यन्त प्राचीन मन्दिर'। दरअसल मन्दिर जितना पुराना होता जाता है उतना ही असरदार होता जाता है। जितना प्राचीन मन्दिर उतना ही अनुभवी उसका भगवान और उतना ही ज्यादा भक्तों का कल्याण।

मैंने, अपनी खुद की आँखों से ऐसे अनेक मन्दिर बनते देखे हैं जो अब 'अत्यन्त प्राचीन' के पद को प्राप्त हो चुके हैं। मन्दिर बनने पर जो हल्के-फुल्के पुजारी कहीं-कहीं से पत्ते की तरह उड़कर आए थे वे भी अब स्थूलकाय और अडिग हो चुके हैं। इसके साथ ही मन्दिर को स्थापित करने वाली साधु-वेशधारी काया भी अपने आपको जगत्-गुरु और महाराज के पद से सुशोभित कर चुकी है। एक 'जगत् गुरु' तो आजकल 'तमसो मा ज्योतिः गमय' अर्थात् 'अंधकार से प्रकाश की ओर ले चल' की प्रार्थना को सार्थक करते हुए, सिर्फ ५० प्रतिशत कमीशन लेकर बड़े-बड़े व्यापारियों के काले धन को सफेद बनाने के गोपनीय अनुष्ठान में जुटा हुआ है। उसके इस पुण्य अनुष्ठान को एक टी.वी. चैनल ने अपने कैमरे में कैद करके जनता तक पहुँचाया है जिससे जगत्-गुरु और उसके मन्दिर को नई ऊँचाइयाँ प्राप्त हुई हैं।

मन्दिरों की ऐसी अनूठी महिमा से प्रभावित होकर मैंने भी एक मन्दिर स्थापित करने का अडिग निर्णय ले लिया है। साधु जैसे कपड़े भी बनवा लिए हैं ताकि कल को महाराज बनने में किसी किस्म की दिक्कत न आए। सुना है कि एक स्वामी जी ने संन्यास देने का केन्द्र खोल रखा है। अगले हफ्ते जाकर उनसे संन्यास भी ले आऊँगा। इस प्रकार पूरा मामला सेट है। सिर्फ यह देखना बाकी है कि मन्दिर में बिठाकर किस देवता को कृतार्थ करूँ। दरअसल मन्दिरों के मामले में सारे देवता एक जैसे भाग्यशाली नहीं हैं। किसी के तो हजारों मन्दिर हैं और किसी के हिस्से में दो-चार ही आते हैं। मुझे ऐसे अल्प-मन्दिरी देवताओं से बड़ी हमदर्दी है। कहते हैं कि इस सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा का तो इस देश में सिर्फ एक ही मन्दिर है। मैं ब्रह्मा जी के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट करता हूँ।

मन्दिर के लिए देवता का चुनाव करना जितना आसान लगता था उतना ही मुश्किल निकला। किसी एक देवता का मन्दिर बनाने पर दूसरों के कोप का भाजन बनना पड़ सकता था। ऐसा सोचने से ही मेरी रूह काँपने लगती थी। आखिर, मैंने देवताओं से ही प्रार्थना की- 'हे देवताओ! मुझे मन्दिर तो जरूर बनाना है, वह तो टल नहीं सकता। ऐसी हालत में अगर तुम्हीं यह बता दो कि किसका बनाऊँ तो बेहतर रहेगा।' कई दिन की प्रतीक्षा के बावजूद देवताओं की तरफ से कोई सिग्नल नहीं मिला। लगता था कि उन में किसी एक नाम पर सहमति नहीं बन पाई। चिन्ता हो गई। हो ही नहीं गई बल्कि रोज-रोज बढ़ने लगी।

यह मेरा सौभाग्य ही था कि कई दिन के बाद मेरे सपने में एक वैसी ही दिव्य शक्ति प्रकट हुई जैसी भूतकाल में भी सैंकड़ों लोगों के सपनों में प्रकट हो चुकी है। उसने आदेश दिया- 'भक्त! यह नया जमाना है। पुराने देवताओं के भरोसे न रह कर किसी नए देवी-देवता का मन्दिर बना।' यह कह कर वह शक्ति अन्तर्धान हो गई। विकट समस्या थी! नया देवता कहाँ से लाऊँ? अगर वह शक्ति मेरी शंकाओं का समाधान करके लुप्त हो जाती तो उसका क्या घिस जाता! लेकिन इनको तो लुप्त होने का ऐसा रोग है कि एक-दो मिनट भी नहीं रुकतीं। खैर! मैं फिर से सौभाग्यशाली निकला कि मेरी व्याकुलता समझकर वह शक्ति दो-तीन दिन के बाद फिर से कुछ सैकंड के लिए सपने में प्रकट हुई और आदेश देते हुए बोली -'नई दिल्ली जाकर स्वामी बटोरानन्द से भेंट कर। वे तेरी समस्या का समाधान करेंगे।' स्वामी जी का अता-पता बताए बिना ही, जैसी कि उसकी आदत थी

वह फिर से लुप्त हो गई।

किसी तरह पूछता-पूछता जब स्वामी बटोरानन्द की फाइव स्टार कुटिया के द्वार पर पहुँचा तो वे मानो मेरी ही प्रतीक्षा कर रहे थे। बोले- 'जल्दी लौट जा और जाकर कुर्सी देवी के प्राचीन मन्दिर की स्थापना कर दे।' इसके बाद साँस के एक ही झटके में आशीर्वाद देते हुए बोले- 'कुर्सी देवी के मन्दिर में हरेक नेता माथा टिकाने आएगा। मन्दिर बहुत फले-फूलेगा। थोड़े ही दिन में तू माला-माल हो जाएगा।' जब समस्या का समाधान बहुत आसानी से हो जाए तो मन कुछ शंकालु हो जाता है। मेरे भीतर भी एक शंका उठी। अगर जनानी की बजाए किसी पुरुष संज्ञा का मन्दिर बने तो क्या ज्यादा सफल नहीं रहेगा? दरअसल मेरे सामने कुछ ही दिन पहले स्थापित एक शनि-मन्दिर की मिसाल थी जो अपने स्थापक बाबा को माला-माल बनाने में सारे टाइम-रिकॉर्ड तोड़ चुका था। मैंने हाथ जोड़कर स्वामी जी महाराज के सामने सुझाव पेश कर दिया- 'महाराज गुस्ताखी माफ करें। अगर कुर्सी देवी की बजाए सिंहासन देव का मन्दिर शुरू किया जाए तो ज्यादा रोबदार लगेगा।' मुझे मूर्ख की संज्ञा से सुशोभित करते हुए वे तपाक से बोले- 'वक्त की नजाकत समझ। मैं पचास साल से दिल्ली में रहकर नेता-जाति के बीच काम कर रहा हूँ और इस नस्ल से बहुत अच्छी तरह वाकिफ हूँ। ये जनानी से ही ज्यादा प्रेरित होते हैं। किसी में हिम्मत नहीं है 'सिंहासन' पर बैठने की। सिंह का तो नाम सुनते ही इनके कपड़े गीले हो जाते हैं। बच्चा! इनको सिंहासन सूट नहीं करता। इन्हें कुर्सी जैसी सेफ सीट चाहिए। ज्यादा बहस मत कर और जो कह दिया उसका पालन कर। और हाँ! मन्दिर स्थापित हो जाने पर सम्पर्क बनाए रखना।' महाराज से विदा लेकर जब चलने लगा तो एक शंका फिर उभर आई। स्वामी जी से निवेदन किया- 'महाराज! आपकी आज्ञा शिरोधार्य है। लेकिन एक शंका है कि कुर्सी देवी का मन्दिर तो बन जाएगा पर अभी-अभी बनने वाला वह मन्दिर 'प्राचीन' कैसे हो जाएगा?' उन्होंने फिर से मुझ पर 'मूर्ख' का एक विशेषण न्यौछावर किया और थोड़ा उग्र रूप धारण करते हुए मेरे पास आए। कान में कुछ मंत्र जैसा फूंका और मुझे मंजिल की तरफ रवाना कर दिया।

महीने भर के बाद, मेरी बस्ती के बाहर खड़े, एक टीले की तलहटी में, मेरे ही निर्देशन में एक पुरातत्त्वीय खुदाई हो रही थी। दरअसल स्वामी बटोरानन्द के मंत्रानुसार मेरे स्वप्न में कुर्सी देवी प्रकट हुई थी, जिसने आदेश दिया था- 'भक्त! उस टीले की तलहटी में मेरी एक अत्यन्त प्राचीन प्रतिमा समाई हुई है। तू उसका उद्धार कर और एक भव्य मन्दिर की स्थापना कर।' चार-पाँच फुट की खुदाई के बाद वही 'अत्यन्त प्राचीन कुर्सी देवी' प्रकट हुई जिसे तीन हफ्ते पहले बड़ी गोपनीयता के साथ, मैंने वहाँ दबवा दिया था। पहले से ही जंग लगी, लोहे की उस कुर्सी का जंग तीन हफ्ते में और भी सघन हो गया था जो उसकी 'अत्यन्त प्राचीनता' की ओर संकेत कर रहा था। मेरे साथ पधारे भक्तों ने कुर्सी देवी की मिट्टी झाड़ी, उसके चारों चरणों में नमन किया, फूल-मालाओं से लादा और कुर्सी देवी की जय-जयकार करते हुए एक जुलूस ने बस्ती की तरफ प्रस्थान किया। बस्ती के एक किनारे पर खाली पड़ी सरकारी जमीन पर जल्दी से एक चबूतरा बनवाया गया और उस पर कुर्सी देवी स्थापित कर दी गई। ऊपर एक शामियाना तान दिया गया और विधि के अनुसार एक पुजारी बिठा दिया गया। मुहल्ले की भीड़ जमा होने लगी। भीड़ में से कुर्सी के बारे में तरह-तरह के 'ऐतिहासिक तथ्य' प्रकट होने लगे जो बाद में दूर-दूर तक फैल गए। 'सतयुग की कुर्सी कलियुग में प्रकट हुई है। चन्द्रगुप्त मौर्य के पास यही कुर्सी थी। राजा भोज कभी इसी पर बैठते थे। वैराग्य धारण करने से पहले भर्तृहरि का यही आसन था। अंग्रेजों को इसके दबे होने का पता चल गया था, लेकिन उन्होंने अपना सिंहासन हिल जाने के भय से इसे नहीं निकलवाया।'

अगले दिन से पत्र-पुष्प लेकर प्रायोजित भक्तगण भी आने लगे। भक्तों को ढोने के लिए दो ट्रक लगा दिए गए थे। सब्जी-पूरी के प्रसाद के अतिरिक्त, वापस जाते समय प्रति भक्त २० रु. का पारिश्रमिक भी दिया जाता था। इस इन्वेस्टमेंट का उत्साहजनक परिणाम निकला। भीड़ देखकर दूसरे भक्त और कुर्सी-भक्त भी खिंचने लगे। जब काफी

भीड़ जुटने लगी तो भक्तों को प्रायोजित करना बन्द कर दिया गया। सरकारी जमीन तो खाली पड़ी ही थी, फूलों और प्रसाद की दुकानें भी खुल गईं और मन्दिर धूम-धाम से चल निकला। थोड़े दिन के बाद उस भूमि पर एक विशाल बोर्ड लगवा दिया गया- 'कुर्सी देवी का अत्यन्त प्राचीन मन्दिर।'

शुरूआत तो हो गई लेकिन अभी कई काम बाकी थे। मन्दिर को भव्यरूप प्रदान करना था और तुरन्त कार्यवाही के रूप में कुर्सी देवी की आरती तैयार करवानी थी। कई कवियों से सम्पर्क साधा गया। संयोग से एक वृद्ध कवि मिल गया जिसे उसकी आयु-वृद्धि के बावजूद किसी कवि सम्मेलन की अध्यक्षीय कुर्सी आज तक नसीब नहीं हो सकी थी। वह कुर्सी देवी के चरणों में एक अदद आरती निःशुल्क रूप से अर्पित करने को तैयार हो गया। उस महामना ने बड़े आर्त भाव से जो आरती रची वह नीचे पेश की जा रही है :

ओम् जय कुर्सी देवी, जय-जय कुर्सी देवी।
पल में संकट काटे, जो हैं तेरे सेवी।।
जो तुझ को हथियावे, मन चाहा सुख पावे।
रिश्तेदारों तक का बेड़ा, पल में पार लगावे।। ओम्..
तू ही मेरी अम्बे, तू ही है जगदम्बे।
पास खींच ले अपने, हाथ हैं तेरे लम्बे।।
मात-पिता बीवी-बच्चे, तू ही सब है मेरी।

दिखा दे जलवा, खिला दे हलवा, क्यों करती देरी।।ओम्..
जो भी छल-बल से, तेरे ऊपर जम जाए।
हो जाएँ वारे-न्यारे, संतान भी बैठी खाए।।
हर कोई ऐरा-गैरा, जो तेरी आरती गावे।
ठाठ करे जीवन में, नेता-अभिनेता बन जावे।। ओम्..

आरती गाई जाने लगी। गायकों का कहना था कि जब तक आरती के स्वरों से बस्ती वासियों के कानों के पर्दे न फड़फड़ाने लगें तब तक उसे सफल आरती नहीं कहा जा सकता।

इसी को ध्यान में रखते हुए ऊँची-ऊँची बल्लियों पर, चारों तरफ मुँह करके, लाउड स्पीकर लगवा दिए गए। बस्ती में आरती की आवाजें गूँजने लगी। कुर्सी देवी से मनौतियाँ माँगी जाने लगीं। टैक्स-फ्री आमदनी से मन्दिर की जेबें भरने लगी। आरती में कहे गए शब्दों के अनुसार वारे-न्यारे होने लगे। स्वामी बटोरानन्द की प्रेरणा पाकर दिल्ली से राजनेता पधारने लगे। कुर्सी देवी के मन्दिर का सरकार से सीधा नाता जुड़ गया और वह सरकारी जमीन कुर्सी देवी को भेंट कर दी गई। ताजा हालत यह है कि मन्दिर में तरह-तरह के कुर्सी-पूजक अपनी भेंट चढ़ा रहे हैं। गाँव पंचायत से लेकर संसद तक की कुर्सी के प्यासे भक्तगण पधार रहे हैं। अफसरी कुर्सी चाहने वालों की भी भीड़ लगी रहती है। मुख्यमंत्री पद के इच्छुक माथा टिका रहे हैं, राज्यपाल की कुर्सी झपटने वाले गुहार लगा रहे हैं और कुर्सियों वाले अपनी कुर्सी की सलामती के लिए दुआएँ माँग रहे हैं।

कुर्सी देवी पर धन चढ़ रहा है, और धन संचित हो रहा है। चुनाव में विजय-श्री की प्राप्ति के लिए एक हारे हुए एम. एल. ए. ने कुर्सी पर सोने का लेप चढ़वा दिया है। कुर्सी देवी दर्शनीय बन गई है। अत्यन्त प्राचीन कुर्सी देवी मन्दिर भव्य रूप धारण करने के करीब पहुँच चुका है। मुझे पूरा विश्वास है कि भावी इतिहासकार कुर्सी देवी मन्दिर के संस्थापक महाराज के रूप में मेरा पुण्य स्मरण करना कभी नहीं भूलेंगे।

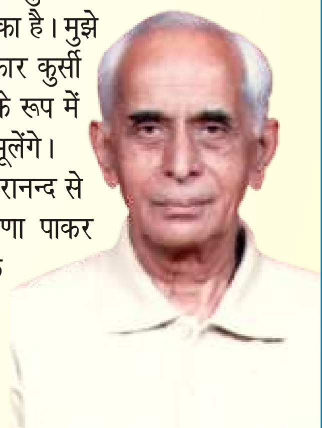

अन्त में एक बात और। स्वामी बटोरानन्द से सम्पर्क बनाए हुए हूँ। उनकी प्रेरणा पाकर कुर्सी देवी के बड़े-बड़े उपासक राजधानी से पधारते रहते हैं और मैं भी स्वामी जी का हिस्सा नियमित रूप से पहुँचाता रहता हूँ।

- डॉ. पूर्ण सिंह डबास
एम- ९३, साकेत, दिल्ली- ११००१७
चलभाष-९८१८२११७७१

कर्मयोगी महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष-न्यास

दया और परोपकार,
की महिमा है निराली।
मिलता है सच्चा सुख,
बढ़ती है खुशहाली।।
सत्यार्थ सौरभ
घर-घर पहुँचावें।

एकता में अनेकता

संसार में नन्हें जीव चींटी से लेकर विशालकाय हाथी पर्यन्त सभी जीव सुख और आनन्द की चाहना तथा दुःख, रोग आदि से बचना चाहते हैं। लेकिन दुःखों से बच नहीं पाते। जैसे कि आत्मा नित्य अर्थात् सदैव रहने वाली है, अनित्य नहीं। यदि आत्मा अनित्य होती तो शरीर उत्पत्ति के साथ आत्मा की भी उत्पत्ति होनी चाहिए। इस दशा में संसार में सभी मनुष्यों की अवस्था एक-सी होनी चाहिए, परन्तु ऐसा नहीं है।

अपने चारों ओर दृष्टि डालें तो दृष्टिगोचर होता है कि संसार में असमानता ही असमानता है। कोई दरिद्र के घर में जन्म लेता है तो कोई सभी प्रकार के ऐश्वर्यों से युक्त घर में, कोई भूखा और नंगा है तो किसी के यहाँ अन्न के भण्डार और वस्त्रों की अधिकता, कोई सुखी तो कोई दुःखी, कोई धनवान तो कोई धनहीन, किसी को सिर छुपाने के लिए केवल आसमान ही है और किसी के पास विलासिता के साधनों से सुसज्जित एक नहीं अनेकों कोठी-बंगले। किसी के पास टूटी-फूटी साइकिल भी नहीं और कोई वातानुकूलित कारों, हवाई जहाजों का स्वामी और किसी के पास एक समय के भोजन के लिए भी धन नहीं तो कोई अरबों-खरबों का स्वामी है।

अपने देश, प्रान्त, शहर, गाँवों या मुहल्ले को छोड़ हम समाज की छोटी सी इकाई परिवार की स्थिति पर दृष्टि डालें, दूसरे के परिवार को छोड़कर अपने स्वयं के परिवार को ही देखें, कितनी असमानता है। एक ही माता-पिता की सन्तान हैं। खाना-पीना, रहना-सहना आदि सबको माता-पिता द्वारा एक-सा प्राप्त होता है। एक ही मकान में सभी सन्तान एक साथ रहती हैं। माता-पिता द्वारा सभी का पालन-पोषण समान रूप से किया जाता है। सभी को एक-सा वातावरण प्राप्त है। परन्तु काई सन्तान किसी रोग से ग्रस्त हो जाती है तो कोई पूर्ण रूपेण स्वस्थ रहती है।

पुनः एक ही माता-पिता की सन्तान हैं- कोई श्यामवर्ण, कोई गौर वर्ण, कोई सन्तान सुन्दर तो कोई कुरूप। कोई जन्म से दुबला-पतला तो कोई हृष्ट पुष्ट शरीर वाला, कोई जन्म से ही विकलांग तो कोई सुन्दर, सुडौल अंग से युक्त, कोई बुद्धिमान तो कोई मन्द या साधारण बुद्धि वाला।

माता पिता द्वारा सभी सन्तानों को शिक्षा का समान अवसर, सुविधाएँ आदि उपलब्ध कराई जाती हैं, परन्तु कोई पढ़ लिखकर उच्च शिक्षा प्राप्त कर लेता है, तो कोई साधारण शिक्षा तक ही पहुँच पाता है।

माता-पिता ने अपनी सम्पत्ति बराबर-बराबर सभी सन्तानों को दी है, लेकिन कोई प्राप्त सम्पत्ति में वृद्धि कर, और धनी हो जाता है, तो कोई मूल सम्पत्ति को भी स्थिर न रखकर उसे नष्ट कर जीवन भर गरीब ही रहता है। कोई परिवार या समाज में गरीब होकर भी सम्मान पाता है तो कोई धनवान होकर भी समाज द्वारा उपेक्षित है।

वेद में इस अवस्था का वर्णन इस प्रकार किया है-

समौ चिद्धस्तौ न समं विविष्टः संमातरा चिन्न समं दुहाते।
यमयोश्चिन्न समा वीर्याणि ज्ञाती चित्सन्तौ न समं पृणीतः।।

– ऋग्वेद १०/११७/६

अर्थात् दो हाथ समान होते हुए भी समान कार्य नहीं करते, एक माता से उत्पन्न दो गायें भी समान दूध नहीं देती। जुडवां बच्चों का भी बल बराबर नहीं होता, समान परिवार के भी व्यक्ति समान नहीं होते।

– डॉ.राजबाला आर्या
संस्कृत प्रवक्ता, आर्य कन्या गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय
मोजमारा, करनाल-१३२०४६

अनेक विशेषताओं से युक्त १८८४ के मूल सत्यार्थप्रकाश के सर्वाधिक नजदीक, तत्कालीन शैली का संरक्षण, मुद्रण अशुद्धियों से रहित
सत्यार्थप्रकाश
अवश्य खरीदें।
घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थप्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आवेंगे।
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर - ३१३००१
अब मात्र कीमत ₹ 45 में
४००० रु. सैंकड़ा
शीघ्र मंगवाएँ

योगेश्वर

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर विशेष

योगेश्वर श्रीकृष्ण

– डॉ. आर. के. चौहान

श्रीकृष्ण सा चरित्र मानव इतिहास में ढूँढ़ पाना असम्भव है। शास्त्र और शस्त्र अर्थात् ज्ञान और कर्म की क्षमताओं का अद्भुत समन्वय और वह भी न्याय एवं धर्म-आधारित साम्राज्य स्थापनार्थ महाभारत के अतिरिक्त अन्यत्र दृष्टिगोचर नहीं होता। महर्षि व्यास सारे महाभारत में एक मात्र श्री कृष्ण को ही ऐसे व्यक्ति के रूप में चित्रित करते हैं-जो न कभी टूटता है, न झुकता है। श्री कृष्ण न पछताते हैं, न रोते हैं और न कभी जय-पराजय की चिन्ता करते हैं, परन्तु उन्हें अपने पुरुषार्थ, कर्त्तव्य और नीतिमत्ता में इतना अधिक विश्वास है कि वे अर्जुन को गीता में यहाँ तक आश्वासन देते हैं कि मेरी योजना में और विश्वरूप की व्यापकता में भीष्म, द्रोण, दुर्योधन, कर्ण और दुःशासन आदि सब पहले से ही मरे पड़े हैं, तुझे केवल निमित्त मात्र बनना है। युधिष्ठिर से लेकर धृतराष्ट्र और भीष्म पितामह तक सभी लोग टूटते हैं, परन्तु कृष्ण कभी नहीं टूटते। वे अनासक्त भाव से घटनाओं का संचालन करते हैं। पीड़ा से मुक्ति पाने के लिए मनुष्य में जिस नरत्व की आवश्यकता है, वह श्री कृष्ण में साक्षात् अवतरित हुआ है, इसीलिए वे नरोत्तम, पुरुषोत्तम और नर से नारायण बनने की क्षमता रखते हैं। यही कारण है कि बंगला लेखक बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय ने 'कृष्ण-चरित्र' में लिखा कि- 'कृष्ण सर्वगुण सम्पन्न हैं। इनकी सब वृत्तियों का सर्वांगसुन्दर विकास हुआ है। ये सिंहासनासीन होकर भी उदासीन हैं, धनुर्धारी होकर भी धर्मवेत्ता हैं, राजा होकर भी पण्डित हैं, शक्तिमान् होकर भी प्रेममय हैं। यह वही आदर्श है जिससे युधिष्ठिर ने धर्म सीखा और अर्जुन जिसका शिष्य हुआ। जिसके चरित्र के समान महामहिमामण्डित चरित्र मनुष्य भाषा में कभी वर्णित नहीं हुआ।'

उधर यशस्वी वक्ता, लेखक एवं पत्रकार क्षितीश वेदालंकार के अनुसार- 'श्री कृष्ण के समान प्रगल्भ, बुद्धिशाली, कर्त्तव्यवान, प्रज्ञावान, व्यवहार कुशल, ज्ञानी एवं पराक्रमी पुरुष आज तक संसार में नहीं हुआ। यह कथन अतिशयोक्ति नहीं माना जाना चाहिए। वे ध्येयवादी के साथ व्यवहारवादी भी थे और इन दोनों की सीमाओं के निपुण ज्ञाता थे। सत्यनिष्ठ के समान ही वे कुशल राजनीतिज्ञ अर्थात् राजधर्म के उपदेशक थे। वे गृहस्थ जीवन के प्रेमी होने के साथ-साथ अत्यन्त संयमी और योगविद्या में पारंगत योगेश्वर भी थे। श्रीकृष्ण भारत की संस्कृति और राष्ट्रधर्म के मूर्तिमान् प्रतीक हैं। जिस राष्ट्रधर्म की ओर हम संकेत करना चाहते हैं, उसका मूल-आधार महाभारत और उसके द्वारा प्रतिपादित श्री कृष्ण का चरित्र ही है।' युग-प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में लिखा- 'देखो! श्री कृष्ण का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है। उनका गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र आप्तपुरुषों के सदृश है। जिसमें कोई अधर्म का आचरण भी कृष्ण जी ने जन्म से मरणपर्यन्त बुरा काम कभी किया हो, ऐसा नहीं लिखा।' महर्षि व्यास ने उन्हें धर्म का पर्याय बताया- **'यतो कृष्णस्ततो धर्मः यतो धर्मस्ततो जयः।'** उक्त उद्धरणों में वर्णित श्री कृष्ण के चरित्र की सम्पुष्टि महाभारत एवं समकालीन ग्रन्थों से होती है, जिसका संक्षिप्त परिचय यहाँ प्रस्तुत करना उपयुक्त

होगा। मथुरा के निरंकुश राजा मामा कंस की जेल में कैद माता-पिता देवकी एवं वासुदेव का पुत्र कृष्ण यमुना पार गोकुल में यशोदा मैय्या और नन्दबाबा की वात्सल्यमयी गोद में खेला और पला। भाई बलराम और गोकुल गोपाल-मण्डल के स्नेह और दुलार ने मेधावी होनहार बालक कृष्ण को सब का प्यारा बना दिया। मक्खन, दूध, घी सम्पन्न गोपालक यदुवंशी समाज का मल्लयुद्ध एवं शस्त्र प्रेमी होना स्वाभाविक था। किशोर बलराम और कृष्ण युवा होने तक इन कलाओं में न केवल पारंगत हो गए वरन् उनके सतत् प्रयास से गोवंश सम्वर्धन पारस्परिक सौहार्द और समृद्धि का आधार बन गया। युवा पीढ़ी बल, शौर्य एवं पुरुषार्थ पाकर सुख-समृद्धि की राह पर अग्रसर हुई। प्रचलित गुरुकुल परम्परा के अन्तर्गत विद्याध्ययन ने कृष्ण में सौम्य, तार्किक एवं विचारशील व्यक्तित्व का विकास कर दिया। शिक्षा समाप्ति पर युद्धकुशल यादव समाज की आपसी कलह और मगधराज जरासन्ध के संरक्षण में मथुरा में कंस की निरंकुशता की बात समझ में आई।

अपनी व्यवहार-कुशलता और नीतिमत्ता से प्रथम यादव कुल का वैमनस्य मिटाया, पश्चात् भाई बलराम एवं युवा

मित्र-मण्डल की सहायता से आतताई कंस का वध कर नाना उग्रसेन को मथुरा के सिंहासन पद पर आसीन किया। कंस के मरने पर अपनी दो बेटियों के विधवा हो जाने से नाराज जरासन्ध ने बार-बार आक्रमण करके यादवों के नाक में दम कर दिया। जरासन्ध की विशाल सेना का सामना करने में अक्षम यादव कुल की राजधानी मथुरा से स्थानान्तरित कर द्वारका के सुरक्षित स्थान पर स्थापित की। अपनी फूफी कुन्ती के वीर पुत्रों पांडवों के वनवास समाप्ति पर मिले खांडव वन को साफ करवा कर इन्द्रप्रस्थ जैसे सुनियोजित, अत्याधुनिक और सुन्दर नगर का निर्माण कराया और युधिष्ठिर को सिंहासनासीन किया। नीति-निपुण कृष्ण ने भारत के बड़े भाग पर राज कर रहे विशाल सेना और धन-बल सम्पन्न मगधराज जरासन्ध को अर्जुन और भीम के साथ गुप्तवेश में मगध पहुँचकर द्वन्द्व-युद्ध के लिए राजी किया। भीम ने जरासंध को उसके मर्म के भेद का लाभ उठाकर मार गिराया और असम्भव को सम्भव कर दिखाया। मगधराज का भार जरासन्ध के बेटे को सौंपकर उससे मित्रता सन्धि की और जरासन्ध द्वारा कैद ७५ राजाओं को मुक्त करके उनसे मित्रता सम्बन्ध बनाए। प्रबन्ध कला में निपुण एवं दूरदर्शी श्रीकृष्ण से सलाह कर युधिष्ठिर ने राजसूय यज्ञ रचा। लक्ष्य था प्रभाव क्षेत्र बढ़ाकर सुशासन अर्थात् न्याय एवं धर्म आधारित सर्वजन प्रिय पांडवराज भारत-भू पर स्थापित करना। अर्जुन और भीम जैसे महाबली योद्धाओं के पौरुष तथा अपनी अद्भुत नीति कुशलता से भारत के अनेक राज्यों से मैत्री सन्धियाँ कीं तथा इन्द्रप्रस्थ साम्राज्य का प्रभावक्षेत्र एवं वर्चस्व बढ़ाया। राजसूय यज्ञ में प्रचलित अर्घ्यपरम्परा के अनुसार सभा में उपस्थित सर्वाधिक वयोवृद्ध, ज्ञानवृद्ध तथा अनुभववृद्ध भीष्म पितामह ने अर्घ्य लेने का अधिकारी श्रीकृष्ण को उद्घोषित किया और कहा- 'हम कृष्ण के शौर्य पर मुग्ध हैं। ब्राह्मणों में ज्ञान की पूजा होती है, क्षत्रियों में वीरता की, वैश्यों में धन की और शूद्रों में आयु की। यहाँ मैं किसी राजा को नहीं देखता, जिसे कृष्ण ने अपने अतुल तेज से न जीता हो। वेद-वेदांग का ज्ञान और बल पृथ्वी के तल पर इनके समान किसी और में नहीं। इनका दान, इनका कौशल, इनकी शिक्षा और ज्ञान, इनकी शक्ति, इनकी शालीनता, इनकी नम्रता, धैर्य और सन्तोष अतुलनीय हैं। ये ऋत्विज हैं, गुरु हैं, स्नातक हैं और लोकप्रिय राजा हैं। ये सब गुण एक पुरुष में मानो मूर्त्त हो गए हैं। इसलिए इन्हें ही अर्घ्य दिया गया है।' यह सुनकर चेदीराज शिशुपाल जो रुक्मणी के कृष्ण से विवाह को लेकर दुःखी था क्रोध में आग-बबूला हो गया और भीष्म सहित कृष्ण को बहुत कुछ भला-बुरा कह गया। संयत श्री कृष्ण ने सब कुछ सुना और सह गए। युधिष्ठिर ने शिशुपाल को शान्त करने का भरसक प्रयास किया, किन्तु वह न माना और श्री कृष्ण को सम्बोधित कर बोला- तू राजा नहीं दास है, वीर नहीं कायर है। दम है तो हमसे युद्ध कर। अन्ततः श्री कृष्ण ने उसकी चुनौती को स्वीकार करते हुए अपने सुदर्शन चक्र के एक ही वार से उसका सिर धड़ से अलग कर दिया। यज्ञ सम्पन्न हुआ। सब लोग अपने-अपने घरों को लौट गए, किन्तु इस घटना का विपरीत प्रभाव अनेक

राजाओं के हृदय पर पड़ा। दुर्योधन तो पांडवों से पहले ही ईर्ष्या करता था। हाथ लगी अनुकूल परिस्थिति का लाभ उठाने से भला कैसे चूकता?

दुर्योधन ने जुआ खेलने में माहिर, शातिर दिमाग अपने मामा

गांधारनरेश शकुनी के साथ मिलकर हस्तिनापुर में द्यूतक्रीड़ा कार्यक्रम आयोजित करके इसमें युधिष्ठिर को फँसा लिया। युधिष्ठिर न केवल राज-पाठ बल्कि अपने भाइयों समेत खुद को ही नहीं और द्रोपदी को भी जूए में हार गया। द्रोपदी का भरी सभा में अपमान किया गया, जिसकी भर्त्सना महात्मा विदुर और श्री कृष्ण के अतिरिक्त कोई अन्य करने का साहस न कर पाया। करते भी कैसे? 'राजा परमं दैवतम्' के सिद्धान्त से जो बंधे थे। उस काल की सर्वोच्च स्थान प्राप्त इस परम्परा का दुरुपयोग होते देख श्री कृष्ण सदृश आप्तपुरुष ने जनहित में उसे तोड़ने में जरा भी संकोच नहीं किया। पांडवों को बारह वर्ष वनवास एवं एक वर्ष का अज्ञातवास भोगना पड़ा, जिसकी समाप्ति पर पांडवों को उनका राज्य दिलाने के लिए सन्धि प्रस्ताव लेकर श्री कृष्ण हस्तिनापुर आए। प्रथम आदरपूर्वक धृतराष्ट्र, भीष्म, द्रोणादि बड़ों से और फिर गांधारी से मिले। वनवास की शर्त पूरी होने पर पांडवों को उनका राज्य लौटाने के लिए दुर्योधन को समझाने को कहा। युद्ध में उसके अपने ही कुल का नाश होने की बात कही। सबने दुर्योधन को समझाया, किन्तु हठी दुर्योधन ने किसी की एक न सुनी। तब श्री कृष्ण सन्धि-प्रस्ताव प्रस्तुत करने के लिए राज्यसभा में उपस्थित हुए। अपने ही भाईयों के लिए उनकी न्यायसंगत बात मानकर दुर्योधन को महायुद्ध टालने की बात कही। उन्होंने कहा-युद्ध होने की स्थिति में न केवल अनगिनत योद्धा युद्ध की अग्नि में भस्म हो जाएँगे, बल्कि असंख्य परिवार भी बरबाद हो जाएँगें। अतः समझदारी से काम लेकर इस महाविनाश की विभीषिका से सबको बचाया जा सकता है, परन्तु दुर्योधन था कि टस से मस न हुआ। तब श्री कृष्ण ने महाबली पांडवों के हाथों मरने के लिए तैयार रहने की चेतावनी दे डाली। परिणाम सम्भावित ही रहा। धार्मिक, सिद्धान्तवादी एवं सत्यनिष्ठ बड़ों के मन में दुर्योधन के हठ पर ग्लानिपूर्ण उपेक्षाभाव उपजा, तो जन-साधारण के मन में कुलद्रोही तथा अन्यायी दुर्योधन के प्रति रोषपूर्ण भाव उत्पन्न होने के साथ जनसंहार का भय। युद्ध में महाकाल बन जाने वाले अर्जुन और भीम के विचार ने कौरव दल के शीर्ष योद्धाओं का भी आत्मविश्वास हिला दिया। अतः समय, स्थान एवं परिस्थितियों को अपनी समझ और नीतिकौशल से सत्यपक्ष के अनुकूल कर लेने की कला में दक्ष श्रीकृष्ण जहाँ सन्धि करवाने के प्रयास की औपचारिकता से निवृत्त हुए, वहाँ सन्धिवार्ता की असफलता का ठीकरा अनैतिक, अन्यायी, कुलघाती एवं जनसंहारक दुर्योधन के सिर पर फोड़ने में भी सफल रहे। सबकी जुबान पर दुर्योधन की हठधर्मिता और पाँडवों के प्रति सहानुभूति की चर्चा थी तथा मन में सम्भावित भयंकर महायुद्ध की विभीषिका का डर। ऐसे में यदि कोई तनाव-मुक्त एवं स्थिर था तो स्थितप्रज्ञ योगेश्वर कृष्ण। युद्ध घोषित हो जाने पर स्वयं को महारथी अर्जुन के रथ का सारथी बनाकर दुर्योधन की ओर से लड़ने वाली यादव सेना पर हथियार न उठाने की स्थिति उत्पन्न कर दी। भाई बलराम को युद्ध से विमुख करके तीर्थयात्रा पर चले जाने को प्रेरित किया। इस प्रकार महाभारत युद्ध में पांडव-पक्ष का संरक्षक होकर नीति, धर्म, शास्त्र एवं शस्त्रों के समन्वय का ऐसा अभेद्य चक्रव्यूह रचा कि विरोधी दल के संख्या में कहीं अधिक सैन्यबल और एक से एक शक्तिशाली योद्धाओं के होते हुए भी पांडव दल को मुकाबले की टक्कर का बनाकर खड़ा कर दिया। जिसका कुशल सारथी श्री कृष्ण परिस्थितियों को सम्भालकर यहाँ तक लाया था, मोहग्रस्त हो वह धनुर्धारी अर्जुन युद्धभूमि में कर्त्तव्यविमुख होकर वैराग्य पूर्ण ज्ञान की बातें करने लगा। अतः अचानक एक नई और विकट स्थिति सामने आ खड़ी हुई। पर भला माधव ने कठिनाइयों से कब मुँह मोड़ा। अपनों को मारने के पाप के भय से थरथराते अर्जुन को पूछा-इन अजर-अमर आत्माओं को मार सकते हो क्या? नहीं, तुम्हारा गांडीव मात्र नश्वर शरीरों का विच्छेद कर सकता है, अमर आत्माओं का नहीं, परन्तु समस्या का यह दार्शनिक समाधान अर्जुन के मन को

विषाद से न निकाल पाया। तब युद्ध में क्षत्रिय का धर्म आतताई, अधर्मी शत्रु का विनाश करके विजय पाकर अधर्म, असत्य एवं अन्याय का प्रतिकार करना बताकर पार्थ के पौरुष को जगाया। इस व्यावहारिक एवं कर्म-प्रधान समाधान ने हतोत्साहित अर्जुन के रक्त में जोश का भरपूर संचार

किया, किन्तु श्री कृष्ण ने देखा कि उसके मुख पर शंका की कुछ रेखाएँ अभी भी शेष थीं। अन्ततः मानव मनोविज्ञान के मर्मज्ञ योगेश्वर कृष्ण ने अर्जुन के चित्तपटल पर जगत् का समष्टीरूप चित्रित करके कालप्रवाह से हो रही घटनाओं की अवश्यम्भावीयता में भागीदार बनकर निमित्त बनने का विकल्प प्रस्तुत करते हुए कहा कि युद्धभूमि में लड़ते हुए मर जाने पर स्वर्गसुख पाओगे और जीतने पर हस्तिनापुर का राज्य। जादू का सा असर हुआ। अर्जुन ने झट-से अपना गांडीव सम्भाल लिया और युद्ध करने को तत्पर हो गया। यह चमत्कार ज्ञान, कर्म, दर्शन, मनोविज्ञान आदि विद्याओं में पारंगत केवल योगीराज श्रीकृष्ण ही कर सकते थे। अतः उक्त परिस्थितियों के आलोक में गीता में उन्होंने योग को नया अर्थ प्रदान किया यह कहते हुए-**'योगः कर्मसु कौशलम्'** उनका वेदोपनिषत् शास्त्र आधारित ज्ञान, मानव मनोविज्ञान आधारित वक्तृत्व, अमर गीता सन्देशरूप में प्रदीप्त हुआ, जो मनुष्यमात्र के लिए कालजयी मार्ग-दर्शक हो गया। महाभारत जैसे महाविनाशकारी युद्ध में उपजी विकट परिस्थितियों का न्यायसंगत, धर्मानुसार तथा यथायोग्य व्यवहारपूर्वक समाधान किया। अन्ततः परिणाम, धर्म, न्याय और सत्य के पक्ष में रहा। अन्याय, अधर्म एवं प्रचलित रूढ़ि आधारित प्रजा विरोधी साम्राज्य समाप्त करके न्याय, धर्म और जनहितैषी साम्राज्य की समस्त भारत-भू पर स्थापना की। लाला लाजपत राय ने अपनी पुस्तक 'योगीराज श्रीकृष्ण' में उनके लिए लिखा- ''जिसने अपने जीवन-काल में धर्म का पालन किया है और धर्म ही के अनुसार धर्म और न्याय के शत्रुओं का नाश किया है।'' संस्कृत कवि माघ ने अपने ग्रन्थ 'शिशुपालवध' में लिखा कि महाभारत युद्धोपरान्त अश्वमेध के समापन पर महाराज युधिष्ठिर स्वीकार करते हैं- 'हे (एतदूढ़गुरुभार) कठिन, भारी भार सम्भाले (श्रीकृष्ण) आप की कृपा का यह कितना बड़ा चमत्कार है कि आज से (सारा) भारत वर्ष मेरे अधिकार में है।' गीताकार के शब्दों में संजय ने सच कहा था-

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम॥ - गीता १८/७८

प्राचीन एवं अर्वाचीन अन्वेषक लेखकों के आलेख महाभारत के नायक, महामानव श्री कृष्ण के तथ्यात्मक जीवन-चरित्र को प्रकाश में लाने का सुखद प्रयास है। अन्ध श्रद्धालु हृदयों में सदियों से जमती आ रही मैल को धो डालना प्रबुद्ध जनों का पुनीत कर्त्तव्य है ताकि शुद्ध, पवित्र एवं श्रेष्ठतम श्रीकृष्ण चरित्र मानव मात्र के सम्मुख उपस्थित होकर अनुकरणीय बन जाए। सत्य, न्याय और धर्म आधारित राज्य व्यवस्था समस्त भारतभूमि पर स्थापित हो जाए। और हर कृष्ण-भक्त यज्ञमय, योगमय एवं कृष्णमय हो जाए।

- साभार- आर्य मन्तव्य.कॉम

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष, श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभा आर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए., श्री शुद्धबोध शर्मा; श्रीगंगानगर, श्री कन्हैया लाल आर्य, शाहपुरा, श्री अशोक कुमार वार्ष्णेय; बडोदरा, डॉ. सत्या पी. वार्ष्णेय; कनाडा, नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता, बगहा (बिहार), श्री गणेशदत्त गोयल, बुलन्दशहर (उ. प्र.), श्री पूर्णचन्द आर्य, कानोड़, श्री वेदप्रकाश आर्य; नई दिल्ली, श्री सत्यनारायण शर्मा; उदयपुर

मांसभक्षण के पक्ष में दिए जाने वाले कतिपय वेदमंत्रों पर विचार

गतांक से आगे ....

द्वितीय मंत्र

यदीदहं युधये संनयान्यदेवयून्तन्वा शूशुजानान्।
अमा ते तुम्रं वृषभं पचानि तीव्रं सुतं पञ्चदशं नि षिञ्चम्।।

– ऋगवेद १०/२७/२

सायण ने इसे इन्द्र के पुत्र वसुक्र की उक्ति माना है और व्याख्या की है कि वसुक्र इन्द्र को कहता है कि मैं तेरे लिए मोटे-ताजे बैल को पकाऊँगा- 'तुम्रं प्रेरकं बलिनं पीवानमित्र्थः वृषभं सेचनसमर्थं पुंपशुं पचानि।' इसी का अनुसरण करते हुए सरिता के लेखक ने लिखा है कि वसुक्र ऋषि का कथन है कि 'जब मैं देवता विरोधी शत्रुओं पर अपने साथियों सहित आक्रमण करूँगा तब मैं तुम्हारे लिए पुष्ट बैल पकाऊँगा और सोमरस निचोडूँगा। पर वस्तुतः प्रथम तथा अगले मंत्रों के समान इसे इन्द्र की उक्ति मानना ही अधिक संगत है। इन्द्र कहता है-

(यदि इत् अहम्) यदि निश्चय ही मैं (अदेवयून्) देवों की हितेच्छा न करने वाले, (तन्वा शूशुजानान्) शरीर से परिपुष्ट हुए शत्रुओं को (युधेय) युद्ध के लिए (संनयानि) रणभूमि में लाता हूँ, तो (अमा) साथ ही, हे स्तोता (ते) तेरे लिए (तुम्रं वृषभं) स्थूल वृषभ को (पचानि) पकाता हूँ, तथा उसमें (पंचदशम्) पन्द्रहवाँ (तीव्रं सुतं) तीव्र अभिषुत रस (निषिंचम्) निषिक्त कर देता हूँ।

अधिदैवत पक्ष में ये शत्रु जिनसे इन्द्र युद्ध करता है वृत्र या मेघ हैं, जिन्हें युद्ध में पराजित कर वह भूमि पर बरसा देता है। वृत्रों के साथ इन्द्र का युद्ध प्रसिद्ध ही है। अपना दूसरा कार्य इन्द्र ने जो यहाँ वर्णित किया है, 'वृषभ को पकाना' है। प्रश्न यह है कि यहाँ सायण के समान वृषभ को पकाने का अर्थ बैल पशु को पकाना ही गृहीत किया जाए, अथवा इसे पहेली मानकर रहस्यार्थ का उद्घाटन करने का प्रयत्न किया जाए। विचार करने पर ज्ञात होता है कि वस्तुतः यह एक पहेली ही है। जिस सूक्त का यह मंत्र है, वह ऋग्वेद में प्रहेलिकात्मक सूक्तों में से एक है तथा इसके अन्य कई मंत्र भी पहेली-रूप ही हैं। यहाँ वृषभ का अभिप्राय सोम (चन्द्रमा या सोमबल्ली) है। सायण ने भी ऋग्वेद में अनेक मंत्रों में वृषभ का अर्थ सोम लिया है। नवम मण्डल में ग्यारह बार एकवचनान्त वृषभ शब्द आया है, जिसमें नौ स्थलों में सायण ने सोम को ही वृषभ माना है। चन्द्रमा को पकाने या परिपक्व करने का अभिप्राय उसे परिपूर्ण करना है। कृष्णपक्ष में क्षीण हुए चन्द्रमा को इन्द्र पुनः परिपक्व कर देता है। जब वह एक-एक कला बढ़ते हुए चतुर्दशी के चाँद तक पहुँच जाता है, तब उसमें पन्द्रहवाँ रस या पन्द्रहवीं कला भी निषिक्त कर

देता है और वह पूर्णिमा का परिपूर्ण चाँद हो जाता है। सोमबल्ली का अर्थ लेने पर भी ऐसी ही व्याख्या होगी,

क्योंकि उसका भी चन्द्रमा से घनिष्ठ सम्बन्ध होता है और वह भी चन्द्रमा के क्षय के साथ क्षीण तथा उसकी परिपूर्णता के साथ परिपूर्ण होती है।

तृतीय मन्त्र

एतद्वा उ स्वादीयो यदधिगवं क्षीरं वा मांसं वा तदेव नाश्नीयात्।

- अथर्व. ६/६(३)/६

सरिता के लेखक ने इसका अर्थ दिया है- 'यह जो गौ का दूध व मांस है, वह अधिक स्वादु होता है, उसे अतिथि से पूर्व न खाएँ।' फिर टिप्पणी की है 'यदि लोग मांस न खाते थे तो उन्हें उसके रसीले होने का ज्ञान कैसे हो गया?' फिर लिखा है- 'इसके बाद के तीन मंत्रों (अथर्व. ६/६/४०-४२) में कहा गया है कि जो मनुष्य अतिथि के लिए मन्त्रपाठपूर्वक जल से सींच कर दूध, घी व मधु लाता है, उसे तो विभिन्न यज्ञ करने का फल मिलता है, किन्तु जो मांस का उपसेचन कर अतिथि को पेश करता है, उसे द्वादशाह (बारह दिनों में समाप्त होने वाले) यज्ञ का फल प्राप्त होता है।'

इस सम्बन्ध में द्रष्टव्य यह है कि वैदिक दृष्टि में गाय सर्वथा अवध्य और पूज्य है। यजुर्वेद ८/४३ में गाय को इडा, रन्ति, काम्या, चन्द्रा, अदिति, सरस्वती, मही, विश्रुति और अघ्न्या नामों से स्मरण किया गया है। इन नामों के क्रमशः अर्थ होते हैं- पूजनीय, आनन्दित रहने वाली, चाहने योग्य, आह्लाद दायिनी, अखण्डनीया, दुग्धवती, श्लाघ्या, गुणवती और न मारी जाने योग्य। गौ के अघ्न्या और अदिति नाम स्पष्ट ही उसकी अवध्यता को सूचित करते हैं। ऋगवेद ८/१०१/१५ में तो स्पष्ट शब्दों में कहा गया है कि इस बेचारी निर्दोष गाय को मारो मत- **'मा गामनागाम् अदितिं वधिष्ट।'** इसी मन्त्र में उसे अमृत की नाभि कहा गया है, क्योंकि वह दुग्धामृत को देती है। उसे मांस की नाभि नहीं कहा गया। गौ की अहन्तव्यता और पूज्यता के शतशः प्रमाण वेदों में विद्यमान हैं। ऐसा होते हुए यह कल्पना में भी लाना अपराध है कि वेद अतिथि को गो-मांस खिलाने का विधान करेगा।

यह भी ध्यान देने योग्य है कि जहाँ वेदों में मनुष्य के भोज्य पदार्थ परिगणित हुए हैं, वहाँ मांस का नाम नहीं है। यजु.१८/६ और १२ में ऊर्ज्, पयस्, रस, घृत, मधु, शाक-सब्जियाँ, व्रीहि, यव, माष, तिल, मूद्ग, खल्व, प्रियंधु, अणु, श्यामाक, नीवार, गोधूम और मसूर का नाम आया है, मांस का नहीं।

अथर्व. ६/१४०/२ में दाँतों को कहा गया है कि तुम व्रीहि, यव, माष और तिल खाओ, यही तुम्हारे लिए भाग रखा गया है। अतः प्रस्तुत प्रसंग में अतिथि को गोमांस खिलाना निश्चय ही अभिप्रेत नहीं हो सकता। प्रस्तुत प्रसंग से अगले ही सूक्त में गौ की महिमा में यह कहा गया है कि गौ में सब देवताओं का निवास होता है, अतः अकेली गौ की सेवा से सब देवों की सेवा हो जाती है। ऐसी महिमामयी गौ का मांस क्या वेद अतिथि को पेश करने के लिए कहेगा?

तो फिर प्रस्तुत प्रसंग में मांस से क्या अभिप्रेत समझा जाए? वस्तुतः यहाँ मांस का अर्थ है मांसल। मांस शब्द से 'अर्श आदिभ्योऽच् (पा. ५/२/२७)' सूत्र से मत्वर्थ में अच् प्रत्यय करने पर मांस शब्द सिद्ध होगा। जैसे नमकवाची लवण शब्द से अच् प्रत्यय करने पर 'लवण' ही रहता है, जिसका अर्थ होता है नमकीन या 'नमकवाला', वैसे ही यहाँ मांस शब्द है। पूज्य अतिथि के लिए सद्गृहस्थ दो प्रकार के गोजन्य पदार्थ पेश करता है। एक शुद्ध गोदुग्ध और दूसरे गोदुग्ध से बने

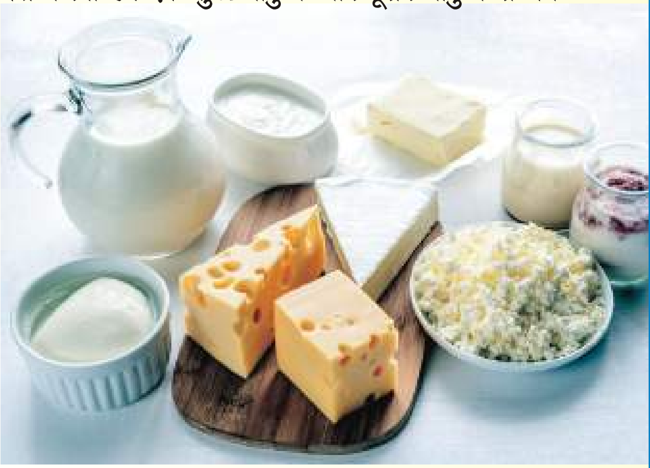

हुए मांसल पदार्थ मलाई- खोया, पेड़ा, बर्फी आदि।

मांसल का अर्थ मांस वाला नहीं, किन्तु जो भी गूदेदार या सारवान् स्थूल पदार्थ है वह मांसल कहलाता है। लोक में भी मांसल शब्द इस अर्थ में प्रयुक्त होता है। अतः प्रस्तुत प्रकरण का यह भाव हुआ कि ये जो गोजन्य स्वादुतर पदार्थ गोदुग्ध और गोदुग्ध से बने पेड़ा, बर्फी आदि हैं, कम से कम उन्हें तो अतिथि से पूर्व कदापि न खायें, विवशता हो तो सामान्य सादा भोजन अतिथि से पूर्व भले ही कर लें। अन्यत्र भी गोजन्य पदार्थों को दो भागों में बाँटा गया है इष् (क्षीर) और ऊर्ज् (स्थूल पदार्थ)- इषे त्वा, ऊर्जे त्वा (यजु. १/१)

दूसरे, गौ का अर्थ पृथिवी भी होता है। अतः 'अधिगवं' का अर्थ 'पृथिवी से उत्पन्न' लें तो क्षीर का भाव होगा दूध, इक्षुरस, फलों का रस या कोई विशेष स्वादिष्ठ रसेदार पेय पदार्थ और मांस का भाव होगा फल, कन्द, हलवा, किशमिश, खजूर, बादाम, छुहारा आदि।

- क्रमशः ....

- आचार्य रामनाथ वेदालंकार

(साभार- आर्ष-ज्योति)

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

- **सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो।** सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-
- सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर **लागत मूल्य से आधी कीमत में** सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
१५००००	दस हजार	११२५००	७५००
७५०००	५०००	३७५००	२५००
१५०००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य — मंत्री-न्यास
भंवरलाल गर्ग — कार्यालय मंत्री
डॉ.अमृत लाल तापड़िया — उपमंत्री-न्यास

पूरा नाम-
चलभाष-

सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०८/१९

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या-

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए।(नवम समुल्लास पर आधारित)- पुरस्कार प्राप्त करिये

१	क्ष १	■	२	वि २	२	■	३	र ३	■
■	४	द्या ४	■	५ ब	५	■	६ न	६	■
७	ध ७	७	■	८	८ मि	८	■	९	ड़ ९

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. जो मनुष्य विद्या और अविद्या के स्वरूप को साथ साथ जानता है वह क्या प्राप्त कर सकता है?
२. जो व्यक्ति यह मानते हैं कि देवताओं (विद्वानों, योगियों) का शरीर योगबल के कारण सदा रहता है वे किससे ग्रस्त रहते हैं?
३. महर्षि दयानन्द ने कितने प्रकार के विपरीत ज्ञान को अविद्या के अंतर्गत माना है?
४. नित्य को नित्य और अनित्य को अनित्य मानना विद्या है या अविद्या?
५. पाषाण मूर्त्यादि की उपासना से मुक्ति प्राप्त होती है या बन्ध?
६. क्या कोई मनुष्य अल्पकाल के लिए कर्म, उपासना और ज्ञान से रहित होता है?
७. किसे छोड़ देना मुक्ति का साधन है?
८. बन्ध और मोक्ष स्वभाव से होता है या निमित्त से?
९. देह और अन्तःकरण जड़ हैं या चेतन?

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ०६/१९ का सही उत्तर

१. महाप्रलय २. आर्यावर्त्त ३. नहीं ४. पाताल
५. दश ६. नहीं ७. सूर्य ८. अमेरिका

"सत्यार्थ प्रकाश पहेली में भाग लें एवं ₹५१०० पुरस्कार प्राप्त करें।"

कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ सितम्बर २०१९

वेदभाष्य करणाधिकारानधिकार समीक्षा

आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय

वर्तमान संदर्भ में वेदभाष्य करने वाले मनुष्यों के लिए यह लेख कुछ आत्म अवलोकन में सहायक हो सकता है! यह लेख प्रश्नोत्तर विधा में प्रस्तुत किया जा रहा है।

प्रश्नः- क्या कोई संस्कृतज्ञ विद्वान् वेदभाष्य करने का अधिकारी हो सकता है?

उत्तरः- कोई कितना ही बड़ा संस्कृतज्ञ विद्वान् हो परन्तु वेदभाष्य करने का अधिकारी नहीं हो सकता।

प्रश्नः- वेदभाष्य करने का अधिकारी कौन है?

उत्तरः- वेदभाष्य करने का अधिकार केवल साक्षात्कृतधर्मा ऋषि को ही है।

प्रश्नः- ऐसे ऋषि कौन होते हैं? उनके लक्षण क्या हैं?

उत्तरः- 'जो साक्षात् सब विद्याओं का जानने वाला, कपट आदि दोषों से रहित धर्मात्मा है कि जो सदा सत्यवादी, सत्यमानी और सत्यकारी है- जिसको पूर्ण विद्या से आत्मा में जिस प्रकार का ज्ञान है उसके कहने की इच्छा की प्रेरणा से सब मनुष्यों पर कृपा दृष्टि से सब सुख होने के लिए सत्य उपदेश का करने वाला है और जो पृथिवी से लेकर परमेश्वर पर्यन्त सब पदार्थों का यथावत् साक्षात् करना और उसके- अनुसार वर्तना, इसी का नाम आप्ति है, इस आप्ति से युक्त है, उसको आप्त= ऋषि कहते हैं।' (महर्षि दयानन्द)

और भी

......क्योंकि आप्त लोग वे होते हैं जो धर्मात्मा, कपट छलादि दोषों से रहित सब विद्याओं से युक्त महायोगी और सब मनुष्यों के लिए सत्य का उपदेश करते हैं जिनमें लेशमात्र भी पक्षपात वा मिथ्याचार नहीं होता। उन्होंने वेदों का यथावत् नित्य गुणों से प्रमाण किया है। - महर्षि दयानन्द सरस्वती

प्रश्नः- इस विवेचन में यह कहां सिद्ध होता है कि, इनको ही वेद व्याख्यान करने का अधिकार है?

उत्तरः- इन्हीं लक्षणों से युक्त ऋषि संज्ञा को प्राप्त होकर मंत्र अर्थात् पद, शब्द और अक्षरों को परस्पर संगत करके उनका यथावत् विचार कर सकता है। क्योंकि जो वेद सब विद्याओं से युक्त है अर्थात् उनमें जितने मंत्र और पद हैं, वे सब सम्पूर्ण सत्य विद्याओं के प्रकाश करने वाले हैं और ईश्वर ने वेदों का व्याख्यान भी वेदों से ही कर रखा है, क्योंकि उनके शब्द धात्वर्थ के साथ योग रखते हैं। जिन्होंने सब विद्याओं और पृथ्वी से लेकर परमेश्वर पर्यन्त सब पदार्थों का यथावत् साक्षात् नहीं किया है, वे बिना यथावत् विचारे कैसे व्याख्यान कर सकते हैं? अगर करते है; तो ऐसा किसी मनुष्य को हठ से साहस करना उचित नहीं। क्योंकि उसमें कहीं न कहीं पक्षपात, छल, कपट आदि दोष सहित मिथ्याचार होगा ही। जिसने महायोगी होकर वेदों से वेदों के पद, शब्द- अक्षर समुदाय की संगति नहीं देखी है तब तक वेदभाष्य करने की उसको सोच भी नहीं रखनी चाहिए।

प्रश्नः- फिर वे संस्कृत विद्वान् क्या करें?

उत्तरः- वे संस्कृतज्ञ विद्वान् महायोगी बनने का निरन्तर पुरुषार्थ करें। तथा उस योग बुद्धि से ऋषियों ने जो लिखा है उन शास्त्रों को समझने की रीति तथा संगतिपूर्वक विद्या का प्रकाश अपने हृदय में करें।

प्रश्नः- आखिर कोई स्पष्ट कथन तो होना चाहिए कि जिससे हम यह कह सकें कि ऐसे ही लोग वेदव्याख्यान कर सकें?

उत्तरः- वेदों के व्याख्यान करने के विषय में ऐसा समझना कि जब तक सत्य प्रमाण, सुतर्क, वेदों के शब्दों का पूर्वापर प्रकरणों, व्याकरणादि वेदांगों, शतपथ आदि ब्राह्मणों, पूर्व मीमांसा आदि शास्त्रों और शास्त्रान्तरों का यथावत् बोध न हो, और परमेश्वर का अनुग्रह, उत्तम विद्वानों की शिक्षा उनके संग से पक्षपात छोड़ के आत्मा की शुद्धि न हो, तथा महर्षि लोगों के किए व्याख्यानों को न देखे, तब तक वेदों के अर्थ का यथावत् प्रकाश मनुष्य के हृदय में नहीं होता। इसलिए, सब आर्य

विद्वानों का सिद्धान्त है कि प्रत्यक्षादि प्रमाणों से युक्त जो तर्क है, वही मनुष्यों के लिए ऋषि है।

प्रश्नः- सायणाचार्य और महीधरादि के किए भाष्य के विषय में क्या कहना चाहिए?

उत्तरः- सायणाचार्य और महीधरादि अल्पबुद्धि लोग थे। इनके भाष्य या व्याख्यान झूठे होने के कारण ठीक ठीक नहीं हैं और उन अनर्थयुक्त व्याख्यानों के मानने से मनुष्यों को अत्यन्त दुःख प्राप्त होता है। बुद्धिमान् आप्त लोग इन व्याख्यानों को प्रमाण नहीं करते क्योंकि इनके व्याख्यान भ्रान्त हैं।

प्रश्नः- आपने सायण, महीधर आदि सभी भाष्यकारों को समवेत रूप में अल्पबुद्धि कह दिया। यह तो समीचीन नहीं है।

उत्तरः- साधारण मनुष्य चाहे वे कितने ही संस्कृतज्ञ विद्वान् हों- जब तक वे पूर्ण विद्वान् होकर महायोगी न हों, तब तक उनका कोई वचन प्रामाणिक अर्थात् प्रमाण करने योग्य नहीं है- अनृषि होने के कारण। अनृषि अल्पज्ञ ही होते हैं।

प्रश्नः- पूर्ण विद्वान् होने से क्या तात्पर्य है?

उत्तरः- पूर्ण विद्वान् होने से हमारा तात्पर्य यह है कि पूर्व ब्रह्मादि ऋषियों से आरम्भ होकर जैमिनि पर्यन्त ऋषियों ने एतरेय शतपथादि ग्रन्थ बनाए थे, तथा पाणिनि, पतंजलि, यास्कादि महर्षियों ने वेदांग जो वेदव्याख्यान किए हैं, वैसे ही जैमिनि आदि ने उपांगाख्यान षट्शास्त्र तथा उपवेद आख्यान और वेदशाखाख्यान रचे हैं, इनके संग्रहमात्र अर्थात् साक्षात् करने से जो सत्य अर्थ प्रकाश होता है वह परमेशकृपया जान लिया गया है, वे ही ईश्वरानुग्रह से पूर्ण विद्वान् होने से समर्थ हैं।

प्रश्नः- यह बात कैसे मान ली जाये कि सायणादि के व्याख्यान इन सब ऋषि मुनियों के बनाए सब ग्रन्थों के विरुद्ध हैं?

उत्तरः- स्थालीपुलाक न्याय से इस तथ्य का प्रकाश किया जाता है। सायण कहते हैं कि 'सर्वे वेदाः क्रियाकाणुतत्पराः सन्ति' अर्थात् सब वेद क्रियाकाण्ड का ही प्रतिपादन करते हैं। यह इन्होंने परम अर्थ को न जानकर ही कहा क्योंकि वेद सब विद्या से युक्त हैं।'

प्रश्नः- क्या इससे पृथक् सब ठीक हैं?

उत्तरः- नहीं! इससे पृथक् भी अपनी व्याख्याओं में शब्दों के अर्थ उल्टे किए हैं। सब मंत्रों से परमेश्वर का ग्रहण कर रखा है। इस पर हम कहते हैं कि जब सब मंत्रों से परमेश्वर ही का ग्रहण है तो फिर जिस अग्नि में हवन करते हैं उसको क्यों ग्रहण किया है? कुल मिलाकर पूर्वापर विरोधी है जो आगे पीछे की संगति को तोड़ देता है।

प्रश्नः- किसी ऐसे मंत्र का दिग्दर्शन कराइए जिससे कि उनका किया मंत्र का अर्थ अन्यथा सिद्ध हो सके।

उत्तरः- इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहुरथो दिव्यः स सुपर्णो गरुत्मान्।
एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः।।

– ऋगवेद १/१६४/४६

सायण ने इस मंत्र का अन्यथा वर्णन किया है। इन्द्र शब्द 'विशेष्य' है और मित्र आदि 'विशेषण'। विशेष्य विशेषण को अच्छे प्रकार समझ भी नहीं सके! इससे बड़ा भ्रम और क्या हो सकता है? जबकि इसके विपरीत इस मंत्र में 'अग्नि' शब्द विशेष्य और 'इन्द्रादि' उसके विशेषण हैं, इस मंत्र में 'विशेष्य' की इच्छा से ईश्वर ने अग्नि शब्द का दोबार उच्चारण किया है, यह रहस्य सायणाचार्य नहीं जान सके। निरुक्तकार ने भी 'अग्नि' शब्द को विशेष्य ही वर्णन किया है। वस्तु स्थिति यह है कि अग्नि और इन्द्रादिनाम एक सद्वस्तु ब्रह्म ही के हैं। क्योंकि इन्द्रादि शब्द अग्नि के विशेषण और अग्नि आदि ब्रह्म के नाम हैं। अस्तु!

विस्तार भय से अधिक नहीं लिखा जाता है। पर सायण के पाण्डित्य का नमूना यह है कि इस मंत्र के तीन आख्यात पद भी उसे दिखाई नहीं दिए और न कारण जान सका। तीन आख्यात पदों के कारण इस मंत्र के तीन अन्वय होते हैं। और एकतिङ्ग वाक्यम्' के आधार पर इसमें तीन वाक्य भी बनते हैं। जहाँ विशेष्य और विशेषण को नहीं समझ सके, वहाँ पर यह उसकी विचित्र बुद्धि और विचित्र संगति देखने को मिली है।

इसी प्रकार सायण के साथ-साथ उवट, महीधर, माधव, आत्मानन्द, दुर्ग, स्कन्द, ग्रिफिथ, विल्सन तथा गोल्डनर आदि सभी की अपव्याख्याएँ हैं। ये सभी पाश्चात्य विद्वान् सायण के अनुगामी हैं।

प्रश्नः- महर्षि दयानन्द की दृष्टि से आपने इन सभी भाष्यकारों की आलोचना कर दी क्योंकि इनके पास ऋषि दृष्टि नहीं थी। पर ऋषि दयानन्द के अनुगामी विद्वानों ने जो भाष्य किए हैं, इनके बारे में आपका क्या मत है? उन्होंने तो सबने यही लिखा है कि हमारा भाष्य ऋषि शैली पर आधारित है। क्या कहेंगे?

उत्तरः- यह उनका मिथ्यादम्भ ही है, कि हमारा भाष्य ऋषि शैली पर आधारित है। क्योंकि जब वे ऋषि हैं ही नहीं तो उनकी ऋषि शैली क्योंकर हो सकती है। हमने ऋषि-आप्तों के विषय में पूर्व में बहुत कुछ लिख दिया है उससे इनके विषय में यथातथ्यतः जाना जा सकता है।

प्रश्नः- अगर इन भाष्यकारों को भी ऋषि मान लिया जावे तो क्या आपत्ति है?

उत्तरः- हमको कोई आपत्ति नहीं है। पर इनको ही एक दूसरे से आपत्ति है। परस्पर एक दूसरे का भयंकर विरोध करते हैं। अगर ये विद्वान् लोग ऋषि होते तो परस्पर विरोध क्यों करते? कोई ऋषि किसी ऋषि का विरोध नहीं करते हैं। क्योंकि उनमें परस्पर विरोध होता ही नहीं है। यथार्थ दर्शन जिसको ज्ञान कहते हैं, कि उसमें विरोध का अवकाश ही नहीं। और जब

यथार्थ दर्शन नहीं होता तो अपने को सबसे बड़ा विद्वान् बताने की होड़ परस्पर ईर्ष्या मिथ्या ज्ञान से जागती है, फिर एक दूसरे को मिथ्या कहते हैं।

प्रश्नः- क्या अपनी अपनी बुद्धि से नवीन भाष्य नहीं रचा जा सकता?

उत्तरः- मनुष्यों के पास अपना जो स्वाभाविक ज्ञान है, वह मात्र साधन कोटि में है। जैसे मनके संयोग के बिना आँख से कुछ भी नहीं देख पड़ता तथा आत्मा के संयोग बिना मन से भी कुछ नहीं होता वैसे ही जो स्वाभाविक ज्ञान है सो वेद और विद्वानों की शिक्षा के ग्रहण करने में साधन मात्र है। जब तक परमात्मा की कृपा उस विद्वान् की बुद्धि को अपने में युक्त करके प्रकाशित नहीं करती, वह विद्वान् उस प्रकाश को निश्चय किए बिना समस्त ऋषियों के सनातन व्याख्यान ग्रन्थों के अनुसार प्रमाणयुक्त अविरोधी भाष्य नहीं बना सकता। यही अल्पबुद्धि लोगों के भ्राँतियुक्त, रागद्वेषयुक्त एक दूसरे को नीचा दिखाने वाले भाष्य नाम से कहे जाने वाले व्याख्यान वेद को दूषित करते रहेंगे।

प्रश्नः- ऐसा देखा गया है कि कुछ विद्वान् वर्तमान विज्ञान के अनेक तथ्यों की उपस्थिति वेदों में दर्शाने के निमित्त वर्तमान विज्ञान के तकनीकी पदों का प्रयोग कर वेदों में सामञ्जस्य बिठाते हैं, क्या उनसे वेद का यथार्थ विज्ञान प्रकाशित हो सकता है?

उत्तरः- वेद की भाषा में अपने पद हैं जो ईश्वर प्रदत्त हैं। वह भाषा ही ब्रह्माण्ड विज्ञान के यथार्थ विज्ञान को खोलती है। यह उनका प्रयत्नमात्र एक थोथा आडम्बर मात्र ही है। इसलिए वे महानुभाव जो भी लिखते हैं, वह यथार्थ से बहुत दूर होता है। ऐसी ऐसी कल्पनाएँ जो बिना सिर पैर की आधारहीन जिनका वेद के व्याख्यान से कोई सम्बन्ध नहीं, वे अपने भाष्य में लिखकर दुनिया को चमत्कृत करना चाहते हैं। वैज्ञानिक महोदयों के विचारने का तरीका मनुष्यकृत बौद्धिक प्रयास का एक अलग तरीका है- परन्तु वेद की भाषा पूर्ण ज्ञान में समस्त ब्रह्माण्डस्थ पदार्थों वा सत्यविद्याओं को समेटे हुए है जो अत्यन्त सरल तथा सहज है जो अल्प प्रयत्न से बहुत गंभीर आशयों को प्रकट करने की क्षमता रखती है। बिना योगी हुए पद और अर्थ स्पष्ट नहीं समझे जा सकते। इसलिए इनके भाष्य यथार्थ विज्ञान को कभी प्रकाशित नहीं कर सकते।

प्रश्नः- जैसाकि वर्तमान में देखा जाता है कि विद्वान् प्रायः कहते है कि एक ही मंत्र के तीन प्रकार के अर्थ होते हैं और वे अर्थ करने के लिए अपनी शक्ति= सामर्थ्य का प्रयोग करते हैं। इसको स्पष्ट कीजिए कि क्या यह त्रिविध भाष्य (एक मंत्र का) समीचीन है?

उत्तरः- हाँ। एतद्विषयक त्रिविध भाष्य (आध्यात्मिक, आधिभौतिक तथा आधिदैविक) करने की परम्परा इन विद्वानों की प्रवृत्ति में पायी जाती है। पर ये वे विद्वान् हैं जिन्होंने दैवत सिद्धान्त का अवगमन नहीं किया है या उनके वश की बात नहीं है। एक ही मंत्र का त्रिविध भाष्य इनके वश की बात है भी नहीं, असंभव होने से।

प्रश्नः- दैवत सिद्धान्त किसको कहते हैं?

उत्तरः- दैवत उनको कहते हैं कि जिनके गुणों का कथन किया जाए अर्थात् जो-जो संज्ञा जिन-जिन मंत्रों में जिस-जिस अर्थ की होती है उन-उन मंत्रों का नाम वही देवता है।

अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुपे ब्रुवे।.......। जैसे इस मंत्र में 'अग्नि' शब्द चिह्न है यहाँ इसी मंत्र में अग्नि को ही देवता समझना चाहिए। ऐसे ही जहाँ-जहाँ मंत्रों में जिस-जिस शब्द का लेख है, वहाँ-वहाँ उस-उस मंत्र को ही देवता समझना होता है। इसमें कारण यह है कि सर्वज्ञ ईश्वर ने जिस-जिस अर्थ को जिस-जिस नाम से वेदों में उपदेश किया है उस-उस नाम वाले मंत्रों से उन्हीं अर्थों को जानना होता है।

प्रश्नः- 'उस-उस नाम वाले मंत्रों से उन्हीं अर्थों को जानना होता है- जिनको ईश्वर ने उपदेश किया है।' इस वाक्य का अर्थ स्पष्ट करने की कृपा करें।

उत्तरः- बड़ी साधारण सी बात है कि उन उन नाम वाले मंत्रों से उन्हीं अर्थों को जानना होता है जिनको ईश्वर ने उपदेश किया है। इसका सुनिश्चित अभिप्राय यह है कि आप अर्थ में स्वतंत्र नहीं हैं कि तर्क से या श्रवण मात्र से अपने मन्तव्य की पूर्ति के लिए जो चाहें सो अर्थ कर लें। अपितु ईश्वर ने जिस-जिस अर्थ को जिस-जिस नाम से कहा है उसी नाम से वही अर्थ करना है। कैसे? ईश्वर से पूछकर। यही कारण था कि ऋषि दयानन्द मंत्र का अर्थ करने से पूर्व पण्डितों से यह पूछकर कि आज कौन सा मंत्र है, इससे पीछे का मंत्र और आगे का मंत्र जानकर समाधि में चले जाते थे। समाधि में ईश्वर से पूछकर मन्त्रार्थ लिखवाते थे।

प्रश्नः- इस प्रकार से ईश्वर से पूछकर तो किसी वर्तमान विद्वान् ने भाष्य नहीं किया है। यह क्षमता किसी में दृष्टिगोचर नहीं होती। फिर यह तो भाष्य ही नहीं हुआ?

उत्तरः- यह भाष्य उसी श्रेणी में आते हैं, जिनको ऋषि ने लिखा है- कि अनार्ष ग्रन्थों को पढ़ना ऐसा ही है कि जैसे खोदा पहाड़ और निकली चुहिया। यानी महान् प्रयत्न से कुछ भी नहीं प्राप्त करना और आर्ष ग्रन्थों का पढ़ना ऐसा ही है कि जैसे कोई गोताखोर अल्प प्रयत्न से अनेक रत्न मोतियों को प्राप्त करना। बिना ईश्वर से पूछे, स्वतंत्र, बुद्धि से किया गया भाष्य, भाष्य है ही नहीं, वह सर्वथा भ्रान्त है। क्रमशः.......

- २४३, अरावली अपार्टमेन्ट, प्रथम तल, अलकनन्दा
नई दिल्ली- ११००१९

शराब की लत छुड़ाने में आयुर्वेद सक्षम

शराब का सेवन सम्पूर्ण विश्व में अधिकांश देशों में किया जाता है। इसके नियमित उपयोग से इसके प्रति निर्भरता उत्पन्न हो जाती है जिसे अल्कोहोलिस्म या शराब की लत के नाम से सामान्यतः जाना जाता है। इस अवस्था में मानसिक, शारीरिक, सामाजिक और आर्थिक कठिनाइयाँ भी सामने आती हैं जिससे अल्कोहोलिस्म से प्रभावित व्यक्ति और उसके परिवार का ही नुकसान होता है। मेडिकल भाषा में इसे Alcohol dependence syndrome कहते हैं। क्योंकि यह एक बीमारी ही नहीं है बल्कि अनेक लक्षणों का समूह है। विश्वभर में हर १८ मौतों में एक मौत शराब की वजह से ही होती है। सड़क दुर्घटनाओं में भी सबसे ज्यादा मौतें शराब के नशे में गाड़ी चलाने से ही होती हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन डब्ल्यूएचओ के आंकड़ों के अनुसार शराब की वजह से हर १० सेकेंड में एक व्यक्ति की मौत होती है। विश्वभर में मरने वाले लोगों में से करीब ६% अल्कोहल की वजह से मरते हैं।

इस लेख के माध्यम से हम आयुर्वेद में इसके उपचार और आसान उपायों की सम्भावनाओं पर चर्चा कर रहे हैं। आयुर्वेदिक ग्रन्थों में इस अवस्था का अनेक जगह वर्णन आया है और उपचार भी वर्णित है। इस अवस्था को मद्यपाश, मद्यासक्ति नाम से भी जान सकते हैं। चरक संहिता में मद्य से सम्बन्धित 'मदात्यय चिकित्सा' नाम का भी अध्याय है जिसमें मद्य से सम्बन्धित विकारों की अवस्थाएँ और उनके आयुर्वेदिक उपचार के बारे में विस्तार से बताया गया है। अगर आप भी शराबखोरी करते हैं और आपको निम्न लक्षण प्रतीत हों तो सम्भल जाइए क्योंकि अब आप भी इसके लती होते जा रहे हैं- हाथ पैर काँपना, सिरदर्द, चक्कर आना, पसीना आना, अस्थायी मानसिक विक्षोभ, घबराहट, गुस्सा आना, चिड़चिड़ापन आदि लक्षण।

सामान्य उपचार

१. यूँ तो मद्यपान सर्वथा त्यक्तव्य है, परन्तु अधिक मात्रा में मद्य का सेवन विष माना गया है, जिसकी चिकित्सा आवश्यक है।

२. धनिया पाउडर, काली मिर्च पाउडर और मिश्री का समभाग में मिश्रण लें और लगभग १ चम्मच कटोरी पानी में भिगोकर रात भर ऐसे ही रहने दें। अगली सुबह खाली पेट इसे छानकर पी जाएँ। इस मिश्रण में anti oxidant गुण होते हैं। जो कि मद्य के विषाक्त असर को कम करने में मदद करते हैं।

३. १ नीम्बू के रस में चीनी और अल्प मात्रा में नमक मिलाएँ और इसे सुबह-सुबह लिया करें यह भी शराब के विषाक्त असर को कम करके शरीर को डिटोक्सीफाई करने में मदद करता है।

४. २५ ग्राम अजवायन बीजों को १२५ मि.ली. पानी में उबालें और प्रतिदिन १-२ बार पीया करें।

५. जब कभी शराब की तीव्र इच्छा हो तो उस समय कुछ मीठा खा लिया करें। अनेक रोगियों ने इस प्रयोग के बाद आराम बताया है।

६. अनेक आयुर्वेद विशेषज्ञ शराब की लत छुड़ाने के लिए भोजन में दही का कुछ अधिक सेवन करने की सलाह देते हैं।

७. अनार, सेब अथवा अंगूर का रस यदि नियमित लिया जाय तो भी शराब की इच्छा में कमी आती देखी गयी है।

८. १० ग्राम शुद्ध घी को मिश्री के साथ सुबह सेवन करना चाहिए। इससे शरीर में उपस्थित विषों का शमन होता है, ऐसा आयुर्वेद विशेषज्ञों का मत है।

९. पानी में कुछ खजूर घिसें तथा दिन में दो या तीन बार इस मिश्रण का सेवन करें।

१०. करेले के रस में थोड़ी छाछ मिलाकर प्रतिदिन पीयें।

११. गाजर शराब पीने की इच्छा को कम करने में सहायक होता है। १ गिलास गाजर का जूस पीयें और आपको शराब की इच्छा में खुद ही कमी प्रतीत होने लगेगी।

१२. किशमिश का १-२ दाना मुँह में डालकर चूसें इसके अलावा किशमिश के शरबत का भी सेवन करें।

१३. शिमला मिर्च (कैप्सिकम) लेकर जूसर से उसका रस निकाल लीजिए। इस रस का सेवन दिन में दो बार आधा आधा कप; भोजन के बाद करें। इस उपाय से शराब की तलब अपने आप घटने लगती है।

१४. अदरक के छोटे-छोटे टुकड़े कर लें और उसमें नींबू निचोड़ कर थोड़ा-सा काला नमक मिलाकर इसको धूप में सूखा लें। सुखाने के बाद अदरक के टुकड़ों को अपनी जेब में रख लें। जब भी दिल करे तभी इसे चूसना शुरू कर दें। कुछ ही दिनों में आप शराब की लत से मुक्ति पा लेंगे।

- डॉ. स्वास्तिक जैन,
चिकित्सा अधिकारी (आयुष विभाग) उत्तराखण्ड

कद्दू की तीर्थयात्रा

कथा सरित

(उन दिनों बैल गाड़ी में यात्रा की जाती थी। थोड़े-थोड़े अन्तर पर रुकना होता था। तीर्थ यात्राएँ कठिन तो होतीं थी परन्तु विविध प्रकार के लोगों से मिलना होता था, विविधसमाज का दर्शन होता था। विविध बोलियों और विविध रीति-रिवाजों से परिचय होता था। कई कठिनाईओं से गुजरना पड़ता, कई अनुभव भी प्राप्त होते थे। यहाँ एक बात अवश्य है कि प्रायः सभी तीर्थयात्री पुण्यलाभ की अभिलाषा रखते थे और रखते हैं तो प्रश्न उठता है कि क्या वास्तव में तीर्थयात्रा से पाप-विमोचन तथा पुण्य-अर्जन होकर भवसागर से पार उतरने का इंतजाम हो जाता है? प्रस्तुत कथा इस सन्दर्भ में विचारोत्तेजक है)

एक बार तीर्थ यात्रा पर जानेवाले लोगों के संघ ने सन्त तुकाराम जी के पास जाकर उनके साथ चलने की प्रार्थना की। तुकारामजी ने अपनी असमर्थता बताई। उन्होंने तीर्थ यात्रियों को एक कड़वा कद्दू देते हुए कहा- "मैं तो आप लोगों के साथ आ नहीं सकता लेकिन आप इस कद्दू को साथ ले जाइए और जहाँ-जहाँ भी स्नान करें, इसे भी पवित्र जल में स्नान करा लायें।"

लोगों ने उनके गूढार्थ पर गौर किए बिना ही वह कद्दू ले लिया और जहाँ-जहाँ गए, स्नान किया वहाँ-वहाँ स्नान करवाया, मंदिर में जाकर दर्शन किए तो उसे भी दर्शन करवाया। ऐसे यात्रा पूरी होते सब वापस आए और उन लोगों ने वह कद्दू सन्तजी को दिया। तुकारामजी ने सभी यात्रिओं को प्रीतिभोज पर आमंत्रित किया। तीर्थयात्रियों को विविध पकवान परोसे गए। तीर्थ में घूमकर आये हुए कद्दू की सब्जी विशेष रूप से बनवायी गयी थी। सभी यात्रिओं ने खाना शुरू किया और सबने कहा कि "यह सब्जी कड़वी है।" तुकाराम जी ने आश्चर्य जताते कहा कि "यह तो उसी कद्दू से बनी है, जो तीर्थ स्नान कर आया है। बेशक यह तीर्थाटन के पूर्व कड़वा था, मगर तीर्थ दर्शन तथा स्नान के बाद भी इसमें कड़वाहट है।"

यह सुन सभी यात्रिओं को बोध हो गया कि 'हमने तीर्थाटन किया है लेकिन अपने मन को एवं स्वभाव को सुधारा नहीं तो तीर्थयात्रा का अधिक मूल्य नहीं है। हम भी एक कड़वे कद्दू जैसे कड़वे रहकर वापस आये हैं।'

-दिलीप पारेख

(साभार) अच्छी खबर से

स्वामी तत्त्वबोध सरस्वती स्मृति दिवस आयोजित

गुलाबबाग स्थित नवलखा महल, उदयपुर में स्मृतिशेष स्वामी तत्वबोध जी सरस्वती की १५वीं पुण्यतिथि के अवसर पर श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास द्वारा २१ जुलाई २०१६ (रविवार) को यज्ञ, प्रतियोगिताओं, भजन व प्रवचन का आयोजन किया गया। न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक जी आर्य ने आह्वान किया कि बंधुत्व, विश्वशान्ति और मानवता का सन्देश देने हेतु महर्षि दयानन्द सरस्वती की कर्मभूमि के जीर्णोद्धार, सौन्दर्यीकरण व आर्य संस्कृति के प्रचार हेतु नवनिर्माण की योजनाओं की क्रियान्विति हेतु सभी आर्यजन तन, मन, धन से आगे आएँ। न्यास के संयुक्त मंत्री प्रो. डॉ. अमृतलाल जी तापड़िया ने स्वामी तत्त्वबोध जी सरस्वती के अनुशासित, दानशील, पुरुषार्थी व्यक्तित्व से प्रेरणा लेने का सन्देश दिया। मुख्य अतिथि न्यासी व शिक्षाविद् श्री मोती लाल आर्य ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती के साढ़े छह माह यहाँ रहकर सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ के प्रणयन को सम्पूर्ण करने की यह धरा आज भी हमें ऊर्जा व प्रेरणा देती है। विशिष्ट अतिथि शिक्षाविद् श्री आर. के. अग्रवाल ने महापुरुषों के जीवन से संस्कारवान चरित्रवान बनने हेतु प्रेरक उद्बोधन प्रदान किया।

यज्ञ से आरम्भ समारोह में महर्षि दयानन्द सरस्वती जीवन दर्शन व उनके मेवाड़ प्रवास पर आधारित क्रमशः कनिष्ठ व वरिष्ठ वर्ग में प्रतियोगिताएँ आयोजित कर विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। श्री इन्द्रदेव पीयूष व सुधाकर पीयूष ने प्रभु भक्ति का भजन सुनाया। आभार न्यास मंत्री श्री भवानी दास जी आर्य ने व शान्ति पाठ न्यास पुरोहित श्री नवनीत जी आर्य ने प्रस्तुत किया। मंच संचालन भूपेन्द्र शर्मा ने किया। स्नेह भोज के साथ सम्पन्न इस श्रद्धांजलि समारोह में बड़ी संख्या में आर्य परिवारों ने भाग लिया ।

- भवानीदास आर्य, मन्त्री-न्यास

समाचार

प्रतियोगिता का आयोजन

प्रति वर्ष की भाँति ही, श्री हरिसिंह जी आर्य, स्वतंत्रता सेनानी की पुण्यतिथि पर दिनांक १५ सितम्बर २०१९ को कक्षा ६ से १२ तक के छात्र-छात्राओं के लिए देश भक्ति एवं वीररस कविता पाठ प्रतियोगिता का आयोजन आर्य समाज कृष्णपोल बाजार जयपुर में आयोजित किया जा रहा है। यह आयोजन सेवानन्द सरस्वती वैदिक धर्म प्रचार प्रसार न्यास द्वारा आयोजित किया जा रहा है। प्रतियोगिता में दो वर्ग बनाए गये हैं जिनमें कक्षा ६ से ८ तथा कक्षा ९ से १२ हैं।

दोंनो वर्गों में प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं सान्त्वना पुरस्कार क्रमशः ११००, ७५०, ५०० एवं २५० के नकद पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र प्रदान किए जायेंगे। अन्य जानकारी हेतु न्यास की अध्यक्ष सत्यार्थ भूषण श्रीमती सरोज जी वर्मा से ९४१३४१८५२६, ०१४१-२३१२५०८ से सम्पर्क कर सकते हैं।

- ओमप्रकाश वर्मा, मन्त्री, चलभाष- ९८८७३८४६६८

आर्य सनातन रक्षा सम्मेलन

राष्ट्र निर्माण पार्टी के तत्वावधान में दिनांक २७ सितम्बर २०१९ को प्रातः १० से २.३० बजे तक तालकटोरा स्टेडियम, नई दिल्ली में आर्य सनातन रक्षा सम्मेलन मनाया जाएगा।

राष्ट्र निर्माण पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष ठाकुर विक्रमसिंह एवं राष्ट्रीय सचिव डॉ. आनन्द ने बताया कि देश की ज्वलन्त समस्याओं पर चिंतनार्थ यह सम्मेलन आहूत किया गया है।

आर्यसमाज हिरणमगरी की अनुकरणीय पहल

आर्यसमाज पर्यावरण संरक्षण के लिए समर्पित है यह सभी को ज्ञात ही है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली द्वारा गत अक्टूबर में आयोजित भव्य अंतर्राष्ट्रीय समारोह के अवसर पर इसी भाव से सभा द्वारा घोषित किया गया था कि '२०२४ में महर्षि दयानन्द जयन्ती के २०० वर्ष पूर्ण होने के पूर्व आगामी ५ वर्षों में अधिकांश आर्य समाजों व आर्य संस्थानों को ग्रीन एनर्जी से युक्त करने की दिशा में सोलर

इनर्जी की ओर स्थानांतरित किया जावेगा।' यह कार्य अन्य किन स्थानों पर शुरू हो गया है यह तो ज्ञात नहीं पर उदयपुर की अत्यधिक सक्रिय उक्त समाज ने सोलर सिस्टम लगाकर एक सन्देश सभी को दिया है। समाज के सभी पदाधिकारी तथा सदस्यगण निश्चित रूपेण बधाई के पात्र हैं।

- अशोक आर्य

बैव सीरिज लैला के प्रति आक्रोश

शुक्रवार १२ जुलाई २०१९, राष्ट्र निर्माण पार्टी के तत्वावधान में एम जे अकबर के बेटे प्रयाग अकबर द्वारा लिखित 'लैला' पुस्तक पर आधारित लैला सीरियल पर प्रतिबन्ध लगाने की माँग को लेकर नई दिल्ली के जन्तर मन्तर पर प्रदर्शन किया गया ।

राष्ट्र निर्माण पार्टी के अध्यक्ष ठाकुर विक्रम सिंह ने कहा कि आज हिन्दू भावनाओं के साथ खिलवाड़ किया जा रहा है उसे सहन नहीं किया जायेगा। उन्होंने कहा कि हम राष्ट्र व्यापी आन्दोलन चलायेंगे। कार्यक्रम का संचालन पूर्व पुलिस महानिदेशक डॉ. आनन्द कुमार ने किया ।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि लैला सीरियल में आर्यावर्त्त नाम रखकर जानबूझकर आर्यों की पुरातन संस्कृति को बदनाम करने की साजिश की जा रही है इसे सहन नहीं किया जायेगा। उन्होंने कहा कि जो कुरीतियाँ इस पुस्तक व सीरियल में दर्शायीं हैं वे आर्यावर्त्त में कभी थी ही नहीं। इस बैव सीरिज में तोड़ मरोड़ कर आर्यों को बदनाम करने का दुस्साहस किया गया है जो निन्दनीय है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश ने कहा कि आर्य शब्द का तात्पर्य श्रेष्ठ है इस तरह की आर्य हिन्दू जाति को बदनाम करने की साजिश किसी कीमत पर आर्य समाज सहन नहीं करेगा।

- अनिल आर्य

महाशय धर्मपाल मीडिया सेंटर, दिल्ली

इस बार, महाशय जी के उदात्त सहयोग व सार्वदेशिक एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारियों के निर्देशन में स्थापित मीडिया सेन्टर व इसकी कार्य-प्रणाली को देखने का अवसर मिला। आर्य समाज में

आधुनिक युग के प्रचार साधनों को अपनाने की आवश्यकता को लम्बे समय से अनुभव किया जा रहा था। उक्त मीडिया सेन्टर व उसके द्वारा किये जा रहे क्रियाकलापों को देखकर निश्चित रूपेण कहा जा सकता है कि यह सेन्टर आर्य समाज के प्रचार में मील के पत्थर के रूप में साबित होगा। सेन्टर की टीम अनुभवी, उत्साही, और समर्पण की भावना से ओतप्रोत दिखी।

स्टूडियो व यहाँ के प्रोडक्शन ने मुझपर एक गहरी छाप छोड़ी है। पूज्य महाशय जी की उदारता को नमन के साथ सभा के अधिकारियों तथा मीडिया सेन्टर की टीम को अनेकानेक बधाइयाँ। भारतीय संस्कृति के सभी प्रेमी सज्जनों से निवेदन है कि वे यूट्यूब चैनल **aryasandesh tv** को अभी सबस्क्राइब अवश्य करने का कष्ट करें।

- अशोक आर्य

वानप्रस्थ साधक आश्रम, रोजड़ में यज्ञ प्रशिक्षण शिविर का आयोजन

वानप्रस्थ साधक आश्रम में दिनांक ११ अगस्त २०१९ को 'यज्ञ प्रशिक्षण शिविर' का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें दो सत्रों में ५ घंटे में यज्ञ का प्रशिक्षण दिया जावेगा। शिविरार्थियों के लिए भोजन की व्यवस्था रहेगी। अगर संभागी १-२ दिन रुकना चाहेंगे तो अनुमति मिल सकेगी।

गायत्री पाठ से बौद्धिक क्षमता का विस्तार

आपको जानकर आश्चर्य होगा कि AIIMS की एक Doctor और IIT के एक वैज्ञानिक ने कई वर्षों तक Research करने के बाद ये निष्कर्ष निकाला है कि हर रोज कुछ समय तक लगातार गायत्री मंत्र पढ़कर बौद्धिक क्षमता का अनन्त विस्तार किया जा सकता है।

AIIMS वर्ष 1998 से गायत्री मंत्र पर Research कर रहा है। सबसे पहले AIIMS के Doctors ने 25 से 30 वर्ष के पुरुषों पर ये प्रयोग किया था। और 9 महीने तक ये रिसर्च की गई थी इसके बाद ५ वर्षों तक इसके Data का अध्ययन किया गया। इसके तहत दिमाग के आगे के हिस्से में होने वाले बदलावों का अध्ययन किया गया था। दिमाग के इस हिस्से को Prefrontal Cortex कहा जाता है। इस हिस्से का काम है- योजनाएँ बनाना, समस्याओं का समाधान करना और जागरूक रहना।

इस रिसर्च के लिए लोगों को दो Groups में बाँट दिया गया था। पहले Group ने तीन महीनों तक हर रोज 108 बार गायत्री मंत्र का मन में पाठ किया और दूसरे Group ने गायत्री मंत्र का पाठ नहीं किया। जो लोग गायत्री मंत्र का पाठ कर रहे थे उनके शरीर में खुशी के वक्त पैदा होने वाले Chemicals तेजी से बढ़ने लगे। इसी तरह का एक Chemical है गाबा। इस Chemical के कम होने पर नींद नहीं आती है और Depression जैसी बीमारियाँ हो जाती हैं, लेकिन गायत्री मंत्र का पाठ करने से दूसरे ही हफ्ते में, शरीर में गाबा Chemical तेजी से बढ़ने लगा। दिमाग में सक्रियता बढ़ाने वाले Chemicals की मात्रा भी ज्यादा हो गई।

पाँच हफ्तों तक किए गए MRI यानी Magnetic Resonance Imaging की मदद से ये नतीजा निकला कि जिन लोगों ने गायत्री मंत्र का पाठ किया था, उनका दिमाग बहुत शान्त और जाग्रत हो चुका था। अपने इस शुरुआती Research में निष्कर्ष निकालते हुए AIIMS की तरफ से कहा गया कि गायत्री मंत्र के माध्यम से इंसान की बौद्धिक क्षमता में अनन्त विस्तार किया जा सकता है। AIIMS का ये शोध अब भी जारी है और इस पर एक विस्तृत रिपोर्ट अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रकाशित की जाएगी।

गुरुकुल करतारपुर में आर्य महोत्सव

आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती के गुरु, गुरुवर स्वामी विरजानन्द सरस्वती की जन्मभूमि पर गुरुकुल करतारपुर (पंजाब) में आषाढ़ी पूर्णिमा विक्रमी सम्वत् २०७६ तदनुसार दिनांक १६ जुलाई २०१६ के दिन एक दिवसीय बृहद् आर्य महोत्सव का आयोजन किया गया। इस पुण्य महोत्सव में वैदिक विद्वान् आचार्य विष्णुमित्र वेदार्थी (बिजनौर), माननीय आचार्य आर्य नरेश जी (हिमाचल प्रदेश), श्री अरुण अब्रोल मन्त्री आर्यप्रतिनिधि सभा मुम्बई, श्री नरेन्द्र सहगल, श्री अश्विनी भगत की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

– प्राचार्य डॉ. नरेश कुमार धीमान

डॉ. पं. लक्ष्मीनारायण सत्यार्थी को काव्योत्सव कलाधर सम्मान

नागदा– मंत्रणा साहित्यिक संस्था नागदा व राष्ट्रीय शिक्षक संचेतना के संयुक्त तत्वावधान में विश्राम भवन नागदा पर आयोजित राष्ट्रीय शिक्षक संचेतना सम्मान समारोह में अन्तर्राष्ट्रीय साहित्य शिरोमणि, शिक्षाविद्, कविरत्न डॉ. पण्डित लक्ष्मीनारायण सत्यार्थी का, जिनके द्वारा देश के राष्ट्र नायकों, शहीदों, स्वतंत्रता सेनानियों, देश भक्तों व आर्य सन्तों की स्मृति में विभिन्न रचनात्मक कार्यक्रमों को मूर्तरूप देने व साहित्यिक अनुष्ठान करने की उपलब्धि पर साहित्य संगम संस्थान प्रकाशन इन्दौर व नव सृजन, दिल्ली द्वारा काव्योत्सव शिरोमणि सम्मान आकर्षक अभिनन्दन पत्र भेंट कर सम्मानित किया गया। डॉ. सत्यार्थी को न्यास की ओर से हार्दिक बधाई।

आचार्य देवव्रत जी दयानन्द व पटेल के प्रदेश में

आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान्, हिमाचल प्रदेश के पूर्व राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी को अब गुजरात प्रदेश का राज्यपाल बनाया गया है। ध्यातव्य है कि आचार्य जी ने हिमाचल प्रदेश के अपने कार्यकाल में जीरो बजट खेती की अवधारणा को साकार करने के क्रम में ख्याति अर्जित की थी। न्यास की ओर से आचार्य जी को बधाई एवं शुभकामनाएँ।

– अशोक आर्य

सत्यार्थ प्रकाश पहेली – ०६/१९ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली– ०६/१९ के चयनित विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- श्रीमती सरोज वर्मा; जयपुर (राज.), श्रीमती उषा आर्या; उदयपुर (राज.), डॉ. राजबाला कादियान; करनाल (हरियाणा), परमजीत कौर; नारायण विहार (दिल्ली), श्री रमेश चन्द्र प्रियदर्शन; सीतामढ़ी (बिहार), श्री पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर (राज.), श्री श्रृयांशु गुप्ता; मनियाँ, श्रीमती किरण आर्या; कोटा (राज.), श्री विनोद प्रकाश गुप्त; दिल्ली, श्रीमती निर्मल गुप्ता; फरीदाबाद (हरियाणा), श्री हीरालाल बलाई; उदयपुर (राज.), श्री गोरवर्धन लाल झंवर; सिहोर (म.प्र.), श्री इन्द्रजित् देव; यमुना नगर (हरियाणा), श्री हर्ष वर्द्धन आर्य; नेमदारगंज, श्री श्याम मोहन गुप्ता; विजय नगर (इन्दौर), श्री देवेन्द्र कुमार (डॉ.); भीलवाड़ा (राज.), श्री अनन्त लाल उज्जैनिया; टी.टी. नगर (भोपाल), श्री सोमपाल सिंह यादव; रामपुर, श्री महेश चन्द्र सोनी; बीकानेर (राज.), प्रधान जी; आर्यसमाज, बीकानेर (राज.), श्रीमती उषा देवी सोनी; बीकानेर (राज.), श्री यज्ञसेन चौहान; विजय नगर (राज.), श्री जीवनलाल आर्य; दिल्ली, श्रीमती सुनिता सोनी; बीकानेर (राज.), श्रीमती रूपा देवी; बीकानेर (राज.), ब्र. विशाल आर्य; गुडा, विश्नोईया, श्री फूलसिंह यादव; मुराद नगर, श्री किशनाराम आर्य; बिलू, श्री रमेश चन्द्र राव; मन्दसौर, श्री रामदत्त आर्य; मनियाँ (धोलपुर), सुप्रिया चावला; जालन्धर, श्री कृष्ण गोपाल; आर्यसमाज बिजयनगर।

सत्यार्थ सौरभ के उपर्युक्त सभी सुधी पाठकों को हार्दिक बधाई।

सत्यार्थ-पीयूष

बहुदेवतावाद

बहुदेवतावाद की वास्तविकता-

यहाँ उल्लेखनीय है कि इन्द्र, विष्णु, महादेव आदि को महर्षि दयानन्द ने ऐतिहासिक महापुरुष स्वीकार किया है परन्तु पुराणों में इन्हें ईश्वरावतार अथवा ईश्वर मानकर भी जन्म, बचपन, यौवन, विवाह आदि की विशद् चर्चा के साथ-साथ इनका जिस प्रकार का चरित्र-चित्रण किया है उसे किसी भी मापदण्ड पर आदर्श अथवा प्रेरक नहीं कहा जा सकता।

तदेवाग्निस्तदादित्यस्तद्वायुस्तदु चन्द्रमाः।
तदेव शुक्रं तद् ब्रह्म ताऽआपः स प्रजापतिः।। - यजु. ३२/१

उस एक ही परमात्मा को अग्नि, आदित्य, वायु और चन्द्रमा कहते हैं। उसी को शुक्र, ब्रह्म, आप और प्रजापति कहते हैं (अर्थात् अग्नि, वायु आदि नाम के शरीरधारी देवता पृथक् से नहीं हैं)

राग, द्वेष, ईर्ष्या, क्रोध, अन्याय इनके चरित्र में पदे-पदे पाये जाते हैं। इष्ट देवताओं में वैरभाव के कारण ही भारत का मध्यकालीन इतिहास धर्म के आधार पर संघर्ष का इतिहास भी रहा। उदाहरण के लिए शिव के बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक की पृष्ठभूमि पाठक जानें। बताया जाता है कि ब्रह्मा के भक्त व शिवभक्त में संघर्ष के दौरान महादेव की कृपा से

उनके भक्त की विजय के फलस्वरूप भीमेश्वर ज्योतिर्लिंग की स्थापना हुई।

कल्पित उपन्यास की भाँति ये पात्र भी अगर मन बहलाने के साधन मात्र होते तो कोई हानि नहीं थी परन्तु सबसे बड़ा दुर्भाग्य आर्य जाति का रहा कि इन्हें ईश्वर के स्थान पर उपास्य देव बना दिया गया। यह सर्वथा वेद के विरुद्ध प्रथा थी।

यहाँ यह भी जान लेना चाहिए कि उपासना का तात्पर्य इन देवताओं की कल्पित मूर्ति बनाकर नाना प्रकार के शृंगार, अभिषेक आदि अथवा बाह्य मिथ्याचार कदापि नहीं है। वेद, तर्क, युक्ति तथा हमारे ऋषि हमें स्पष्ट रूप से देवताओं की पूजा का प्रकार बताते हैं।

महर्षि दयानन्द ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका में स्पष्ट लिखते हैं:-

प्रश्नः- क्या ये चालीस देव भी मनुष्य की उपासना के योग्य हैं।

उत्तरः- इनमें से कोई भी उपासना के योग्य नहीं है किन्तु व्यवहार मात्र की सिद्धि के लिए ये सब देव हैं और सब मनुष्यों की उपासना के लिए योग्य तो देव एक ब्रह्म ही है इसमें 'स ब्रह्मात्यादिंत्या चक्षते' शतपथ प्रमाण है कि जो सब जगत् का कर्त्ता, सर्वशक्तिमान, सबका इष्ट, सबकी उपासना के योग्य, सबका धारण करने वाला, सबमें व्यापक और सबका कारण है, जिसका आदि अन्त नहीं और जो सच्चिदानन्दस्वरूप है जिसका कभी जन्म नहीं होता और जो कभी अन्याय नहीं करता इत्यादि विशेषणों से वेदादि शास्त्रों में जिसका प्रतिपादन किया है उसी को इष्टदेव मानना चाहिये और जो कोई इससे भिन्न को इष्ट देव मानता है उसको अनार्य अर्थात् अनाड़ी कहना चाहिये।

एक ईश्वर की ही उपासना करें-

यो भोजनं च दयसे च वर्धनमार्द्रादा शुष्कं मधुमद्दुदोहिथ।
स शेवधिं नि दधिषे विवस्वति विश्वस्यैक ईशिषे सास्युक्थ्यः।।
- ऋगवेद २/१३/६

हे मनुष्यों! जो दयालु ईश्वर समस्त संसार को रचकर और उसकी रक्षा करके तथा रक्षा के साधन रूप पदार्थ देकर सारे संसार को सुखों से परिपूर्ण करता है, वह एक ही उपासना करने के योग्य है।

क्योंकि शतपथ ब्राह्मण में जो आर्यों का इतिहास है कि परमेश्वर जो सबका आत्मा है, सब मनुष्यों को उसी की उपासना करनी उचित है। इसमें जो कोई कहे कि परमेश्वर को छोड़ के दूसरे में ईश्वर-बुद्धि से प्रेम-भक्ति करनी चाहिये तो उससे कहें कि तू सदा दुःखी होकर रोदन करेगा क्योंकि जो ईश्वर की उपासना करता है वह सदा आनन्द में रहता है, जो दूसरों में ईश्वर-बुद्धि करके उपासना करता है वह कुछ भी नहीं जानता। इसलिए विद्वानों के बीच में पशु अर्थात् गधे के समान है। इससे यह निश्चय हुआ कि आर्य लोग सब दिन से एक ईश्वर की ही उपासना करते आए हैं।

- अशोक आर्य
नवलखा महल, गुलाब बाग

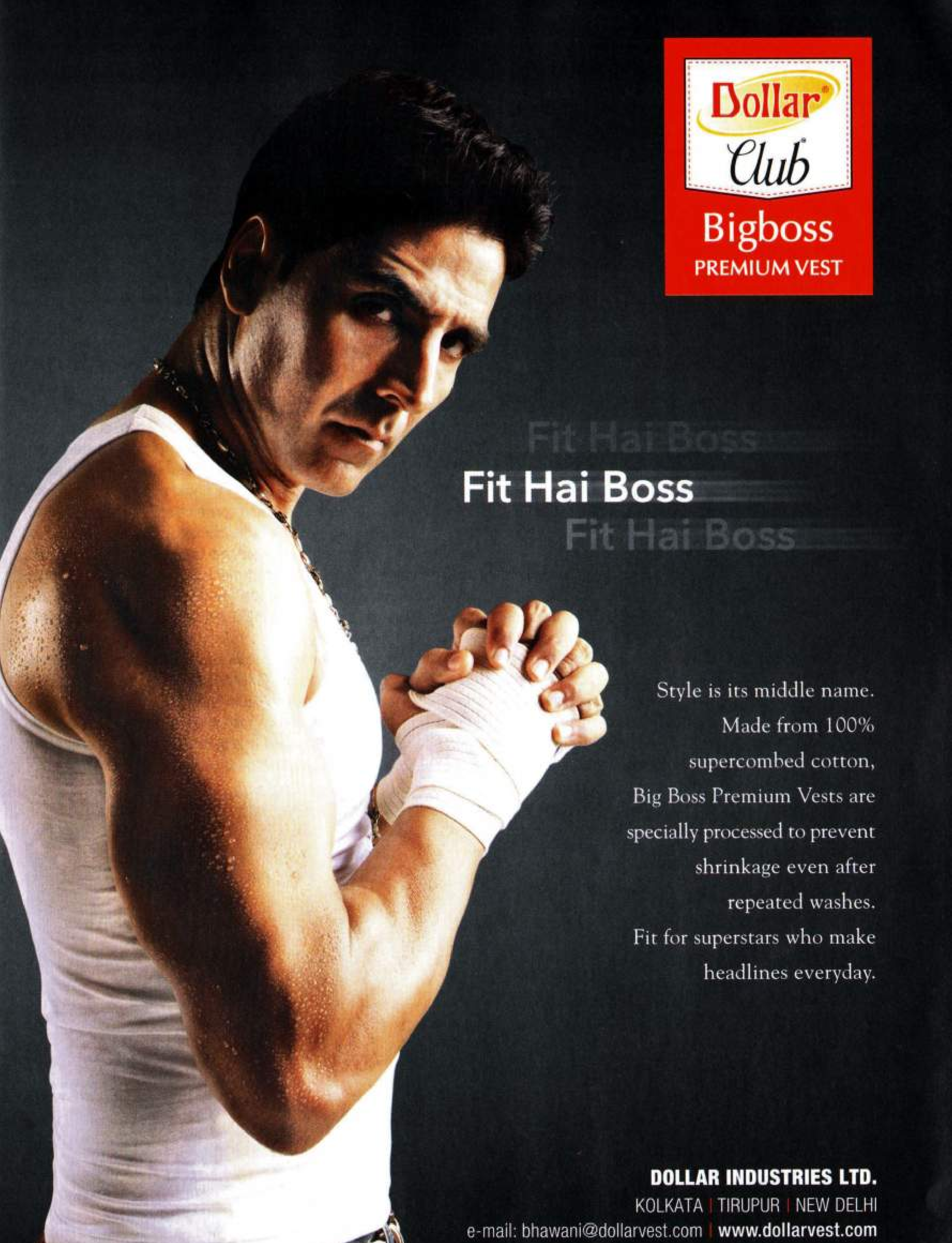
Dollar
Club
Bigboss
PREMIUM VEST
Fit Hai Boss
Style is its middle name.
Made from 100%
supercombed cotton,
Big Boss Premium Vests are
specially processed to prevent
shrinkage even after
repeated washes.
Fit for superstars who make
headlines everyday.
DOLLAR INDUSTRIES LTD.
KOLKATA | TIRUPUR | NEW DELHI
e-mail: bhawani@dollarvest.com | www.dollarvest.com

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 August-2019 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2019-2021

जैसी हानि प्रतिज्ञा मिथ्या करने वाले की होती है, वैसी अन्य किसी की नहीं। इससे जिसके साथ जैसी प्रतिज्ञा करनी, उसके साथ वैसे ही पूरी करनी चाहिये।

– सत्यार्थ प्रकाश
द्वितीय समुल्लास पृष्ठ ३४

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य
मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर